AL HASANAT BOOKS PVT. LTD.

क़ुरआन और विज्ञान

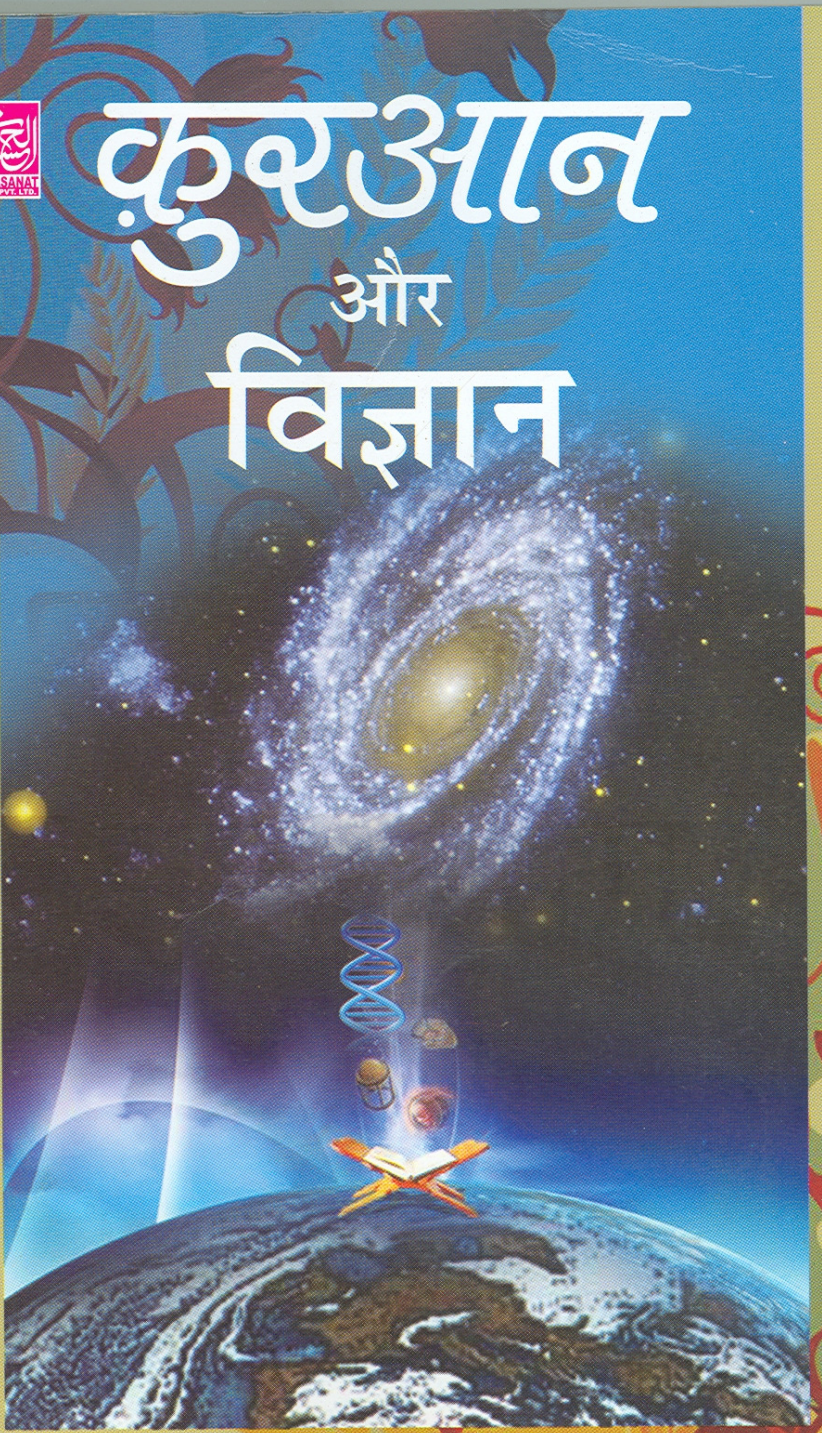

डा० ज़ाकिर नाइक

QUR'AN AUR VIGYAAN

Dr. ZAKIR NAIK

संस्करण 2010

प्रकाशक:
ए०एम०फ़हीम
अल हसनात बुक्स प्रा० लि०
3004/2, सर सय्यद अहमद रोड
दरिया गंज,नई दिल्ली-110002
TeL: 011-23271845,011-41563256
E-mail:alhasanatbooks@rediffmail.com
faisalfaheem@rediffmail.com

मुद्रक
एच० एस० ऑफसेट प्रेस
दरिया गंज दिल्ली.2

मूल्य:
40/-

अनुक्रम

☆ परिचय 5
☆ अंतरिक्ष-विज्ञान 10
☆ प्रकृति-विज्ञान 21
☆ जल-विज्ञान 23
☆ भू-विज्ञान 28
☆ समुद्र-विज्ञान 32
☆ वनस्पति-विज्ञान 39
☆ जीव-विज्ञान 42
☆ चिकित्सा-विज्ञान 49
☆ शरीर-रचना विज्ञान 51
☆ भ्रूण-विज्ञान 53
☆ सार्वजनिक-विज्ञान 67
☆ अंतिमाक्षर 70

संदर्भ ग्रंथ

Bibliography

1. **Shadows of Creation:** Dark Matter and the Structure of the Universe, Michaol Riordan & David N. Sehramm. W.H. Freeman and Company-1991
2. **Space Facts:** Susan Goodman. Oxford University Press, 1993
3. **Introductory Astronomy & Astrophysics:** Zeilik & Smith, Sounders College Publishing, 1987
4. **Theory of Everything:** The Origin and Fate of the Universe. Stephen W. Hawking. New Millennium Press. 2002
5. **Astronomy:** The Definitine Guide, Robert Burnham, Alan Dyer. Jeff Kanipe. Barnes & Noble Book. 2003
6. **Dicovering the Universe:** W.J. Koufmann III. W. H. Freeman & Company 1993
7. Mc Graw- **Hill Dictionary of Scientific and Technical Terms.** 2003
8. **Dictionary of Science and Technology:** Simon Collin, Bloons Bury Publishing. 2003
9. The New Penguin **Encylopedia-2003**

परिचय

जब से इस पृथ्वी ग्रह पर मानवजाति का जन्म हुआ है, तब से मनुष्य ने हमेशा यह समझने की कोशिश की है कि प्राकृतिक व्यवस्था कैसे काम करती है, रचनाओं और प्राणियों के ताने-बाने में इसका अपना क्या स्थान है और यह कि आख़िर खुद जीवन की अपनी उपयोगिता और उद्देश्य क्या है? सच्चाई की इसी तलाश में, जो सदियों की मुद्दत और धीर-गम्भीर संस्कृतियों पर फैली हुई है, संगठित धर्मों ने मानवीय जीवन शैली की संरचना की है और एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक धारे का निर्धारण भी किया है। कुछ धर्मों की बुनियाद लिखित पक्तियों व आदेशों पर आधारित है जिन के बारे उनके अनुयायियों का दावा है कि वह खुदाई या ईश्वरीय साधनों से मिलने वाली शिक्षा का सारतत्व है जब कि अन्य धर्म की निर्भरता केवल मानवीय अनुभवों पर रही है।

कुरआन पाक, जो इस्लामी आस्था का केंद्रीय श्रोत है, एक ऐसी किताब है जिसे इस्लाम के अनुयायी मुसलमान, पूरे तौर पर खुदाई या आसमानी साधनों से आया हुआ मानते हैं। इसके अलावा, कुरआन-ए-पाक के बारे में मुसलमानों का यह विश्वास, कि इसमें रहती दुनिया तक मानवजाति के लिये निर्देश मौजूद है, चूंकि कुरआन का पैग़ाम हर ज़माने, हर दौर के लोगों के लिये है, अतः इसे हर युगीन समानता के अनुसार होना चाहिये, तो क्या कुरआन इस कसौटी पर पूरा उतरता है?

प्रस्तुत शोध-पत्र में मुसलमानों के इस विश्वास का वस्तुगत विश्लेषण Objective Analysis पेश किया जा रहा है जो, क़ुरआन के इल्हामी साधन द्वारा अवतरित होने की प्रामाणिकता को वैज्ञानिक खोज के आलोक में स्थापित करती है।

मानव इतिहास में एक युग ऐसा भी था जब "चमत्कार" या चमत्कारिक वस्तु मानवीय ज्ञान और तर्क से आगे हुआ करती थी. चमत्कार की आम परिभाषा है, ऐसी 'वस्तु' जो साधारणतया मानवीय जीवन के प्रतिकूल हो और जिसका बौद्धिक विश्लेषण इंसान के पास न हो। फिर किसी भी वस्तु को करिश्मे के तौर पर मानने से पहले हमें बहुत बचना पड़ेगा जैसे 1993 में "टाइम्स ऑफ़ इंडिया" मुम्बई में एक ख़बर प्रकाशित हुई, जिस में "बाबा पायलट" नामी एक साधू ने दावा किया था कि वह पानी से भरे एक टैंक के अंदर लगातार तीन दिन और तीन रातों तक पानी में रहा, अलबत्ता जब रिपोर्टरों ने उस टैंक की सतह का जायज़ा लेने की कोशिश की तो उन्हें इसकी इजाज़त नहीं मिली।

बाबा ने पत्रकारों को उत्तर दिया, किसी को उस मां के गर्भ (Womb) का विशलेषण करने की आज्ञा कैसे दी जा सकती है जिससे बच्चा जन्म लेता है, साफ़ ज़ाहिर है कि "साधू जी" कुछ ना कुछ छुपाना चाह रहे थे, और उनका यह दावा सिर्फ़ ख्याति प्राप्त करने की एक चाल थी. यक़ीनन नये दौर का काई भी व्यक्ति जो तर्क संगत सोच (Rational Thinking) की ओर थोड़ा झुकाव रखता होगा, ऐसे किसी "चमत्कार" को नहीं मानेगा। अगर ऐसे झूठे और आधारहीन चमत्कार "अल्लाह द्वारा" घटित होने का आधार बने तो नऊज़ू-बिल्लाह हमें दुनिया के सारे जादूगरों को ख़ुदा के अस्ल प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करना पड़ेगा।

एक ऐसी किताब जिसके अल्लाह द्वारा अवतरित होने का दावा

किया जा रहा है, उसी आधार पर एक चमत्कारी जादूगर की दावेदारी भी है तो उसकी पुष्टि:Verification भी होनी चाहिये। मुसलमानों का विश्वास है कि पवित्र क़ुरआन अल्लाह द्वारा उतारी हुई और सच्ची किताब है, जो अपने आप में एक चमत्कार है, और जिसे समस्त मानवजाति के कल्याण के लिये उतारा गया है। आइये हम इस आस्था और विश्वास की प्रामाणिकता का बौद्धिक विश्लेषण करते हैं।

पवित्र क़ुरआन की चुनौती

तमाम संस्कृतियों में मानवीय शक्ति, वचन और रचनात्मक क्षमताओं की अभिव्यक्ति के प्रमुख साधनों में साहित्य और शायरी (काव्य रचना) सर्वोपरि है। विश्व इतिहास में ऐसा भी ज़माना गुज़रा है, जब समाज में साहित्य और काव्य को वही स्थान प्राप्त था जो आज विज्ञान और तकनीक को प्राप्त है।

ग़ैर-मुस्लिम भाषा-वैज्ञानिको की सहमति है कि अरबी साहित्य का श्रेष्ठ सर्वोत्तम नमूना पवित्र क़ुरआन है, यानि इस ज़मीन पर अरबी साहित्य का सर्वोत्कृष्ठ उदाहरण क़ुरआन-ए-पाक ही है। मानवजाति को पवित्र क़ुरआन की चुनौति है कि, इन क़ुरआनी आयातों (वाक्यों) के समान कुछ बना कर दिखाए. उसकी चुनौती है:

وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا بِسُوْرَتٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا شُهَدَآئَكُمْ مِنْ دُوْنِاللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوْا النَّارَالَّتِىْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ.

"और अगर तुम्हें इस मामले में संदेह हो कि यह किताब जो हम ने अपने बंदों पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं तो इसकी तरह एक ही सूरत (क़ुरआनी आयत) बना लाओ, अपने सारे साथियों को बुला लो, एक अल्लाह को छोड़ कर, शेष जिस-जिस की चाहो, सहायता ले लो, अगर तुम सच्चे हो तो यह काम कर दिखाओ, लेकिन अगर तुमने ऐसा नहीं किया और यक़ीनन कभी नहीं कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे इंसान और पत्थर। जो तैयार की गई है

मुनकरीन हक़ (सत्य को नकारने वालों) के लिये।"

(अल-कुरआन: सूरह 2, आयत 23 से 24)

पवित्र कुरआन स्पष्ट शब्दों में सम्पूर्ण मानवजाति को चुनौती दे रहा है कि वह ऐसी ही एक सूर: बना कर तो दिखाए जैसी कि कुरआन में कई स्थानों पर दर्ज़ है। सिर्फ़ एक ही ऐसी सूर: बनाने की चुनौति, जो अपने भाषा सौन्दर्य, मृदुभाषिता, अर्थ की व्यापकता और चिंतन की गहराई में पवित्र कुरआन की बराबरी कर सके, आज तक पूरी नहीं की जा सकी।

यद्यपि आधुनिक युग का तटस्थ व्यक्ति भी ऐसे किसी धार्मिक ग्रंथ को स्वीकार नहीं करेगा जो अच्छी साहित्यिक व काव्यात्मक भाषा का उपयोग करने के बावजूद यह कहता हो कि धरती चिप्टी है। यह इस लिये है कि हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां इंसान के बौद्धिक तर्क और विज्ञान को आधारभूत हैसियत हासिल है। बहुत से लोग ऐसे भी है जो अल्लाह द्वारा पवित्र कुरआन के अस्तित्व की प्रामाणिकता में उसकी असाधारण और सर्वोत्तम साहित्यक भाषा को पर्याप्त प्रमाण नहीं मानेंगे। कोई भी ऐसा ग्रंथ जो आसमानी होने और अल्लाह द्वारा प्रदत्त होने का दावेदार हो, उसे अपने प्रासंगिक तर्कों की दृढ़ता के आधार पर ही स्वीकृति के योग्य होना चाहिये।

प्रसिद्ध भौतिकवादी दर्शनशास्त्री और नोबुल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक **अल्बर्ट आइन्स्टाइन** के अनुसार **"धर्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है और धर्म के बिना विज्ञान अंधा है"** इसलिये अब हम पवित्र कुरआन का अध्ययन करते हुए यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि आधुनिक विज्ञान और पवित्र कुरआन में परस्पर अनुकूलता है या प्रतिकूलता?

यहां याद रखना ज़रूरी है कि पवित्र कुरआन कोई वैज्ञानिक किताब नहीं है बल्कि यह "निशानियों" (Signs) की, यानि आयात

की किताब है। पवित्र कुरआन में छह हज़ार से अधिक "निशानियां" (आयतें/वाक्य) हैं, जिनमें एक हज़ार से अधिक वाक्य विशिष्ट रूप से विज्ञान एवं वैज्ञानिक विषयों पर बहस करती हैं।

हम जानते है कि कई अवसरों पर विज्ञान "यू टर्न" लेता है, यानि विगत-विचार के प्रतिकूल बात कहने लगता है। अत: मैंने इस किताब में केवल सर्वमान्य वैज्ञानिक वास्तविक्ताओं को ही चुना है जबकि ऐसे विचारों व दृष्टिकोण पर बात नहीं की है जो महज़ कल्पना हो और पुष्टि के लिये वैज्ञानिक प्रमाण न हो।

डॉ0 ज़ाकिर नाइक
मुंबई, भारत

❍❖❍

अंतरिक्ष-विज्ञान
Astrology

सृष्टि की संरचना: "बिग बैंग"

अंतरिक्ष विज्ञान के विशेषज्ञों ने सृष्टि की व्याख्या एक ऐसे सूचक (Phenomenon) के माध्यम से करते हैं और जिसे व्यापक रूप से "बिग बैंग" (Big Bang) के रूप में स्वीकार किया जाता ह। बिग बैंग के प्रमाण में पिछले कई दशकों की अवधि में शोध एवं प्रयोगों के माध्यम से अंतरिक्ष विशेषज्ञों की इकट्ठा की हुई जानकारियां मौजूद हैं. बिग-बैंग दृष्टिकोण के अनुसार प्रारम्भ में यह सम्पूर्ण सृष्टि प्राथमिक रसायन (Primary Nebula) के रूप में थी फिर एक महान विस्फ़ोट यानि "बिग-बैंग" (Secondry Separation) हुआ जिस का नतीजा आकाशगंगा के रूप में उभरा. फिर वह आकाश गंगा विभाजित हुआ और उसके टुकड़े सितारों, ग्रहों, सूर्य, चंद्रमा, आदि के अस्तित्व में परिवर्तित हो गए. कायनात, प्रारम्भ में इतनी पृथक और अछूती थी कि 'संयोग:Chance' के आधार पर उसके अस्तित्व में आने की 'सम्भावना:Probability' शून्य थी।

पवित्र क़ुरआन सृष्टि की संरचना के संदर्भ से निम्नलिखित आयतों में बताता है:

اَوَلَمۡ یَرَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ کَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰهُمَا.

"क्या वह लोग जिन्होंने (नबी स.अ.व. की पुष्टि) से इनकार कर दिया है, ध्यान नहीं करते कि यह सब आकाश और

धरती परस्पर मिले हुए थे, फिर हम ने उन्हें अलग किया"

(अल-क़ुरआन: सूर: 21,आयत 30)

इस क़ुरआनी वचन और "बिग-बैंग" के बीच आश्चर्यजनक समानता से इनकार सम्भव ही नहीं! यह कैसे सम्भव है कि एक किताब जो आज से 1400 वर्ष पहले अरब के रेगिस्तानों में व्यक्त हुई अपने अंदर ऐसे असाधारण वैज्ञानिक यथार्थ समाए हुए है?

आकाशगंगा की उत्पत्ति से पूर्व प्रारम्भिक वायुगत-रसायन

वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि सृष्टि में आकाशगंगाओं के निर्माण से पहले भी, सृष्टि का सारा द्रव्य एक प्रारम्भिक वायुगत रसायन (Gas) की अवस्था में था, संक्षिप्त यह कि आकाशगंगा निर्माण से पहले वायुगत-रसायन अथवा व्यापक बादलों के रूप में मौजूद था जिसे आकाशगंगा के रूप में नीचे आना था. सृष्टि के इस प्रारम्भिक द्रव्य के विश्लेषण में गैस से अधिक उपयुक्त शब्द "धुंआ" है। निम्नांकित आयतें क़ुरआन में सृष्टि की इस अवस्था को 'धुंआ' शब्द से रेखांकित किया है।

ثُمَّ اسۡتَوٰۤی اِلَی السَّمَآءِ وَهِیَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلۡاَرۡضِ ائۡتِیَا طَوۡعًا اَوۡ کَرۡهًا قَالَتَاۤ اَتَیۡنَا طَآئِعِیۡنَ ۝

"फिर वे आसमान की ओर ध्यान आकर्षित हुए जो उस समय सिर्फ़ धुंआ था, उस (अल्लाह) ने आसमान और ज़मीन से कहा: अस्तित्व में आजाओ, चाहे तुम चाहो या न चाहो" दोनों ने कहा: हम आ गये फ़र्माबरदारों (आज्ञाकारी लोगों) की तरह।"

(अल-क़ुरआन:सूर:41,आयत11)

एक बार फिर, यह यथार्थ भी "बिग-बैंग" के अनुकूल है, जिसके बारे में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (**स.अ.व.**) की पैग़मबरी से पहले किसी को कुछ ज्ञान नहीं था. (बिग-बैंग दृष्टिकोण बीसवीं सदी यानि पैग़म्बर-काल के 1300 वर्ष बाद की पैदावार है), अगर इस युग में कोई भी इसका जानकार नहीं था तो फिर इस ज्ञान का स्रोत क्या हो सकता है?

धरती की अवस्था: गोल या चपटी

प्रारम्भिक ज़मानों में लोग विश्वस्त थे कि ज़मीन चपटी है, यही कारण था कि सदियों तक मनुष्य केवल इसलिये सुदूर यात्रा करने से भयाक्रांत रहा, कि कहीं वह ज़मीन के किनारों से किसी नीची खाई में न गिर पड़े! सर फ्रांस डेरिक वह पहला व्यक्ति था जिसने 1597 ई० में धरती के गिर्द (समुद्र मार्ग से) चक्कर लगाया और व्यवहारिक रूप से यह सिद्ध किया कि ज़मीन गोल (वृत्ताकार) है।

यह बिंदु दिमाग़ में रखते हुए ज़रा निम्नलिखित क़ुरआनी आयत पर विचार करें जो दिन और रात के अवागमन से सम्बंधित है:

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۝

"क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में"

(अल-क़ुरआन:सूर:31,आयत29)

यहां स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है कि अल्लाह तआला ने क्रमवार रात के दिन में ढलने और दिन के रात में ढलने (परिवर्तित होने) की चर्चा की है, यह केवल तभी सम्भव हो सकता है जब धरती की संरचना गोल (वृत्ताकार) हो। अगर धरती चपटी होती तो दिन का रात में या रात का दिन में बदलना बिल्कुल अचानक होता।

निम्न में एक और आयत देखिये, जिसमें धरती के गोल बनावट की ओर इशारा किया गया है:

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ ۝

"उसने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ (यथार्थ रूप से) उपन्न किया है, वही दिन पर रात और रात पर दिन को लपेटता है।"

(अल-क़ुरआन:सूर:39आयत5)

यहां प्रयोग किये गये अरबी शब्द "कव्वर" का अर्थ है किसी एक वस्तु को दूसरे पर लपेटना या Overlap करना या (एक वस्तु को

दूसरी वस्तु पर) चक्कर देकर (तार की तरह) बांधना। दिन और रात को एक दूसरे पर लपेटना या एक दूरसे पर चक्कर देना तभी सम्भव है जब ज़मीन की बनावट गोल हो।

ज़मीन किसी गेंद की भांति बिल्कुल ही गोल नहीं बल्कि नारंगी की तरह (Geo-Spherical) है, यानि ध्रुव (Poles) पर से थोड़ी सी चपटी है। निम्न आयत में ज़मीन के बनावट की व्याख्या यूं की गई है:

وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا ۝

"और फिर ज़मीन को उसने बिछाया"

(अल-क़ुरआन:सूर:79आयत30)

यहां अरबी शब्द "दहाहा" प्रयुक्त है, जिसका आशय "शुतुरमुर्ग़ के अंडे" के रूप, में धरती की वृत्ताकार बनावट की उपमा ही हो सकता है। इस प्रकार यह प्रमाणित हुआ कि पवित्र क़ुरआन में ज़मीन के बनावट की सटीक परिभाषा बता दी गई है, यद्यपि पवित्र क़ुरआन के अवतरण-काल में आम विचार यही था, कि ज़मीन चपटी है।

चांद का प्रकाश प्रतिबिंबित प्रकाश है

प्राचीन संस्कृतियों में यह माना जाता था कि चांद अपना प्रकाश स्वयं व्यक्त करता ह। विज्ञान ने हमें बताया कि चांद का प्रकाश, प्रतिबिंबित प्रकाश है फिर भी यह वास्तविक्ता आज से चौदह सौ वर्ष पहले, पवित्र क़ुरआन की निम्नलिखित आयत में बता दी गई है:

تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ۝

"बड़ा पवित्र है वह जिसने आसमान में बुर्ज (दुर्ग) बनाए और उसमें एक चिराग़ और चमकता हुआ चांद आलोकित किया।"

(अल-क़ुरआन,सूर:25,आयत61)

पवित्र क़ुरआन में सूरज के लिये अरबी शब्द "शम्स" प्रयुक्त हुआ है। अलबत्ता सूरज को 'सिराज' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है

मशाल (Torch), जबकि अन्य अवसरों पर उसे 'वहाज' अर्थाथ जलता हुआ चिराग़ या 'प्रज्वलित दीपक' कहा गया है। इसका अर्थ "प्रदीप्त तेज और महानता" है। सूरज के लिये ऊपरोक्त तीनों स्पष्टिकरण उपयुक्त हैं क्योंकि उसके अंदर प्रज्वलन Combustion का ज़बरदस्त कर्म निरंतर जारी रहने के कारण तीव्र ऊषमा और रौशनी निकलती रहती है।

चांद के लिये पवित्र क़ुरआन में अरबी शब्द 'क़मर' प्रयुक्त किया गया है और इसे बतौर 'मुनीर:प्रकाशमान, बताया गया है, ऐसा शरीर जो 'नूर' (ज्योति) प्रदान करता हो। अर्थात प्रतिबिंबित रौशनी देता हो। एक बार पुन: पवित्र क़ुरआन द्वारा चांद के बारे में बताए गये तथ्य पर नज़र डालते हैं, क्योंकि निसंदेह चंद्रमा का अपना कोई प्रकाश नहीं हैं बल्कि वह सूरज के प्रकाश से प्रतिबिंबित होता है और हमें जलता हुआ दिखाई देता है। पवित्र क़ुरआन में एक बार भी चांद के लिये 'सिराज, वहाज, या दीपक' जैसे शब्दों का उपयोग नहीं हुआ है और न ही सूरज को 'नूर या मुनीर' कहा गया है। इस से स्पष्ट होता है कि पवित्र क़ुरआन में सूरज और चांद की रौशनी के बीच बहुत स्पष्ट अंतर रखा गया है, जो पवित्र क़ुरआन की आयत के अध्ययन से साफ़ समझ में आता है।

निम्नलिखित आयात में सूरज और चांद की रौशनी के बीच अंतर इस तरह स्पष्ट किया गया है:

هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِیَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا ۚ

"वही है जिस ने सूरज को उजालेदार बनाया और चांद को चमक दी।"

(अल-क़ुरआन:सर:10,आयत,5)

اَلَمْ تَرَ وْا کَیْفَ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۚ

"क्या देखते नहीं हो कि अल्लाह ने किस प्रकार सात आसमान एक के ऊपर एक बनाए और उनमें चांद को नूर (ज्योति) और सूरज को चिराग़ (दीपक) बनाया।"

(अल-क़ुरआन:सूर:71,आयत15से16)

इन पवित्र आयतों के अध्ययन से प्रमाणित होता है कि महान पवित्र क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान में धूप और चांदनी की वास्तविकता के बारे में सम्पूर्ण सहमति है।

सूरज घूमता है

एक लम्बी अवधि तक यूरोपीय दार्शिनिकों और वैज्ञानिकों का विश्वास रहा है कि धरती, सृष्टि के केंद्र में चुप खड़ी है और सूरज सहित सृष्टि की प्रत्येक वस्तु उसकी परिक्रमा कर रही है। इसे धरती का केंद्रिय दृष्टिकोण 'भूकेन्द्रीय सिद्धांत Geo-Centric Theory भी कहा जाता है, जो बतलीमूस-काल, दूसरी सदी ईसा पूर्व से लेकर 16वीं सदी ई० तक सर्वमान्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहा है. पुन: 1512 ई० में निकोलस कॉपरनिकस ने "अंतरिक्ष में ग्रहों की गति के सौर-केंद्रित ग्रह-गति सिद्धांत" Heliocentric Theory of Planetary Motion का प्रतिपादन किया, जिसमें कहा गया था कि सूरज सौरमण्डल के केंद्र में यथावत है और अन्य तमाम ग्रह उसकी परिक्रमा कर रहे हैं. 1609 ई० में एक जर्मन वैज्ञानिक, जोहानस कैप्लर ने Astronomia Nova (खगोलीय तंत्र) नामक एक किताब प्रकाशित कराई। जिसमें विद्वान लेखक ने; न केवल यह सिद्ध किया कि सौरमण्डल के ग्रह 'दीर्घ वृत्तीय:Elliptical' अण्डाकार धुरी पर सूरज की परिक्रमा करते हैं, बल्कि उसमें यह प्रमाणिकता भी अविष्कृत है की, सारे ग्रह अपनी धुरियों (Axis) पर अस्थाई गति से घूमते है। इस अविष्कृत ज्ञान के आधार पर यूरोपीय वैज्ञानिकों के लिये सौरमण्डल की अनेक व्यवस्थाओं की सटीक व्याख्या करना सम्भव हो गया। रात और दिन के परिवर्तन की निरंतरता के, इन अविष्कारों के बाद यह समझा जाने लगा कि सूरज यथावत है और धरती की तरह अपनी धुरी पर परिक्रमा नहीं करता। मुझे याद है कि मेरे स्कूल

के दिनों में भूगोल की कई किताबों में इसी ग़लतफ़हमी का प्रचार किया गया था। अब ज़रा पवित्र क़ुरआन की निम्न आयतों को ध्यान से देखें:

وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّیْلَ وَالنَّهَارِ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ۝

"और वह अल्लाह ही है, जिसने रात और दिन की रचना की और सूर्य और चांद को उत्पन्न किया, सब एक-एक फ़लक (आकाश) में तैर रहे है।"

(अल-क़ुरआन:सूरह:21,आयत33)

ध्यान दीजिए कि ऊपरोक्त आयत में अरबी शब्द 'यस्बहून' प्रयुक्त किया गया है, जो 'सब्हा' से उत्पन्न है, जिसके साथ एक ऐसी हरकत की वैचारिक संकल्पना जुड़ी हुई है जो किसी शरीर की सक्रियता से उत्पन्न हुई हो। अगर आप धरती पर किसी व्यक्ति के लिये इस शब्द का उपयोग करेंगे तो इसका अर्थ यह नहीं होगा कि वह लुढ़क रहा है बल्कि इसका आशय होगा कि अमुक व्यक्ति दौड़ रहा है अथवा चल रहा है अगर यह शब्द पानी में किसी व्यक्ति के लिये उपयोग किया जाए तो इसका अर्थ यह नहीं होगा कि वह पानी पर तैर रहा है बल्कि इसका अर्थ होगा कि "अमुक व्यक्ति पानी 'में' 'तैराकी:Swimming' कर रहा है।"

इस प्रकार जब इस शब्द 'यसबह' का किसी आकाशीय शरीर (नक्षत्र) सूर्य के लिये उपयोग करेंगे तो इसका अर्थ केवल यही नहीं होगा कि वह शरीर अंतरिक्ष में गतिशील है, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ कोई ऐसा साकार शरीर होगा जो अंतरिक्ष में गति करने के साथ साथ अपने ध्रुव पर भी घूम रहा हो। आज स्कूली पाठयक्रमों में अपनी जानकारी ठीक करते हुए यह वास्तविक्ता शामिल कर ली गई है कि सूर्य की ध्रुवीकृत परिक्रमा की जांच किसी ऐसे यंत्र से की जानी चाहिये, जो सूर्य की परछाई को फैला कर दिखा सके, इसी प्रकार अंधेपन के ख़तरे से दो चार हुए बिना सूर्य की परछाई का शोध

सम्भव नहीं। यह देखा गया है कि सूर्य के धरातल पर धब्बे हैं जो अपना एक चक्कर लगभग 25 दिन में पूरा कर लेते है। मतलब यह कि सूर्य को अपने ध्रुव के चारों ओर एक चक्कर पूरा करने में लगभग 25 दिन लग जाते है। इसके अलावा सूर्य अपनी कुल गति 240 किलो मिटर प्रति सेकेण्ड की रफ़्तार से अंतरिक्ष की यात्रा कर रहा है। इस प्रकार सूरज समान गति से हमारे देशज-मार्ग आकाशगंगा की परिक्रमा बीस करोड़ वर्ष में पूरी करता ह।

لَاالشَّمْسُ یَنْبَغِیْ لَهَا اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّیْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَسْبَحُوْنَ ۝

"न सूर्य के बस में है कि वह चांद को जाकर पकड़े और न 'रात', 'दिन' पर वर्चस्व ले जा सकती है, यह सब एक-एक आकाश में तैर रहे हैं।"

(अल-क़ुरआन:सूर:36,आत40)

यह पवित्र आयत एक ऐसे आधारभूत यथार्थ की तरफ़ इशारा करती है जिसे आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान ने बीती सदियों में खोज निकाला है, यानि चांद और सूरज की मौलिक 'परिक्रमा पथ:Orbits' का अस्तित्व अंतरिक्ष में सक्रिय यात्रा करते रहना है।

वह 'निश्चित स्थल:Fixed Place' जिसकी ओर सूरज अपनी सम्पूर्ण मण्डलीय व्यवस्था सहित यात्रा पर ह। आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान द्वारा सही-सही पहचान ली गई ह। इसे 'सौर-कथा:Solar Epics', का नाम दिया गया है। पूरी सौर व्यवस्था वास्तव में अंतरिक्ष के उस स्थल की ओर गतिशील है जो, हरक्यूलिस नामक ग्रह Elphalerie-Area में अवस्थित है और उसका वास्तविक स्थल हमें ज्ञात हो चुका है।

चांद अपनी धुरी पर उतनी ही अवधि में अपना चक्कर पूरा करता जितने समय में वह धरती की एक परिक्रमा पूरी करता है। चांद को अपनी एक ध्रुवीय परिक्रमा पूरी करने में 29.5 दिन लग जाते हैं। पवित्र क़ुरआन की आयत में वैज्ञानिक वास्तविकताओं की पुष्टि पर

आश्चर्य किये बिना कोई चारा नहीं है. क्या हमारे विवेक में यह सवाल नहीं उठता, कि आख़िर "कुरआन में प्रस्तुत ज्ञान का स्रोत और ज्ञान का वास्तविक आधार क्या है?"

सूरज बुझ जाएगा?

सूरज का प्रकाश एक रसायनिक-क्रिया का मुहताज है जो उसके धरातल पर विगत पांच अरब वर्षों से जारी है. भविष्य में किसी अवसर पर यह कृत रुक जाएगा और तब सूरज पूर्णतया बुझ जाएगा, जिसके कारण धरती पर जीवन की समाप्ति हो जाए. पवित्र कुरआन सूरज के अस्तित्व की पुष्टि इस प्रकार करता है:

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

"और सूरज, वह अपने ठिकाने की तरफ़ चला जा रहा है, यह ब्रह्मज्ञान के स्रोत 'महाज्ञानी' का बांधा हुआ गणित है"

(अल-कुरआन:सूर:36,आयत38)

विशेष: इसी प्रकार की बातें पवित्र कुरआन के सूर:13-आयत2, सूर: 35-आयत13, सूर:39-आयत 5 एवं 21 में भी बताई गई हैं. यहां अरबी शब्द 'मुस्तक़िर:ठिकाना' का प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है पूर्व से संस्थापित 'समय' या 'स्थल' यानि इस आयत में अल्लाह कहता है कि सूरज पूर्वत: निश्चित स्थल की ओर जा रहा है, ऐसा पूर्व निश्चित समय के अनुसार ही करेगा, अर्थात् यह कि सूरज भी समाप्त हो जाएगा या बुझ जाएगा।

अन्तर तारकीय द्रव

पिछले ज़माने में संगठित अंतरिक्ष व्यवस्थओं से बाहर, वाह्य अंतरिक्ष: वायूमण्डल को सम्पूर्ण रूप से 'ख़ाली:Vacum' माना जाता था, इसके बाद अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस अंतरिक्ष्य-प्लाविक के द्रव्यात्मक पुलों (Bridges) की खोज की, जिसे प्लाविक: Plasma

कहा जाता है, जो सम्पूर्ण रूप से लोनाइज़्ड-गैस lonized-gas पर आधारित होते हैं और जिसमें सकारात्मक प्रभाव वाले 'अकेले:loni' और स्वतंत्र इलैक्ट्रॉनों की समान संख्या होती ह। द्रव की तीन जानी पहचानी अवस्थाओं यानी ठोस, तरल और ज्वलनशील तत्वों के अतिरिक्त प्लाविक को 'चौथी अवस्था' भी कहा जाता है. निम्नलिखित आयत में पवित्र कुरआन अंतरिक्ष के प्लाविक द्रव या 'अन्त: इस्पात द्रव्य:Intra Steels Material' की ओर संकेत करता ह।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۝

"वह जिस ने छह दिनों में ज़मीन और आसमानों और उन सारी वस्तुओं का निर्माण पूरा कर दिया जो आसमान और ज़मीन के बीच में हैं।"

(अल-कुरआन,सूर:25,आयात59)

किसी के लिये यह विचार भी हास्यास्पद होगा कि वायुमण्डल, अंतरिक्ष एवं आकाशगंगा के द्रव्यों का अस्तित्व 1400 वर्ष पहले से ही हमारे ज्ञान मैं था।

सृष्टि का फैलाव

1925 ई० में अमरीका के अंतरिक्ष वैज्ञानिक एडोन हबल Adone Hubble ने इस संदर्भ में एक प्रामाणिक खोज उपलब्ध कराया था कि सभी आकाशगंगा एक दूसरे से दूर हट रहे हैं, अर्थात्, सृष्टि फैल रही है। सृष्टि व्यापक हो रही है। यह एक वैज्ञानिक यथार्थ है इस बारे में पवित्र कुरआन में सृष्टि की संरचना के संदर्भ से अल्लाह फ़रमाता है:

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۝

"आसमान को हम ने अपने ज़ोर से बनाया है और हम इसकी कुदरत:प्रभुत्व, रखे हैं (या इसे फैलाव दे रहे हैं)"

(अल-कुरआन:सूर:51,आयत47)

अरबी शब्द 'वासिऊन' का सही अनुवाद 'इसे फैला रहे हैं' बनता है तो यह आयत सृष्टि के ऐसे निर्माण की ओर संकेत करती है जिसका फैलाव निरंतर जारी है।

वर्तमान युग का प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक स्टीफ़न हॉकिंग अपने शोधपत्र: 'समय का संक्षिप्त इतिहास:A brief History of Time' में लिखता है:---"यह खोज! कि, सृष्टि फैल रही है, बीसवी सदी के महान बौद्धिक और चिंतन क्रांतियों में से एक है।" अब ध्यान दीजिये कि पवित्र क़ुरआन ने सृष्टि के फैलाव की कथा उसी समय बता दी थी, जब मनुष्य ने दूरबीन तक का अविष्कार नहीं किया था। इसके बावजूद संदिग्ध विवेक रखने वाले कुछ लोग, यह कह सकते हैं कि पवित्र क़ुरआन में आंतरिक्ष यथार्थ का मौजूद होना आशचर्य की बात नहीं, क्योंकि अरबवासी इस ज्ञान के प्रारम्भिक विशेषज्ञ थे।

अंतरिक्ष विज्ञान में अरबों के प्राधिकरण की सीमा तक तो उनका विचार ठीक है, लेकिन इस बिंदु को समझने में वे नाकाम हो चुके हैं कि अंतरिक्ष विज्ञान में अरबों के उत्थान से भी सदियों पहले ही, पवित्र क़ुरआन का अवतरण हो चुका था। इसके अतिरिक्त, ऊपर वर्णित बहुत से वैज्ञानिक यथार्थ जैसे बिग-बैंग से सृष्टि के प्रारम्भन आदि की जानकारी से तो अरब उस समय भी अनभिज्ञ ही थे, जब वह विज्ञान और तकनीक के विकास और उन्नति की सर्वोत्तम ऊंचाई पर थे, अत: पवित्र क़ुरआन में वर्णित वैज्ञानिक यथार्थ को, अरबवासियों की विशेषज्ञता नहीं माना जा सकता। दर-अस्ल इसके प्रतिकूल सच्चाई यह है कि अरबों ने अंतरिक्ष विज्ञान में इसलिये उन्नति की, क्योंकि अंतरिक्ष और सृष्टि के निर्माण विषयक जानकारियां पवित्र क़ुरआन में आसानी से उप्लब्ध हो गए थे। इस विषय को पवित्र क़ुरआन में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है।

❍❖❍

प्राकृतिक-विज्ञान
Natural Science

परमाणु भी विभाजित किये जा सकते हैं

प्राचीन काल में 'परमाणुवाद:Atomism के दृष्टिकोण' शीर्षक से एक सिद्ध दृष्टिकोण को व्यापक धरातल पर स्वीकार किया जाता था। यह दृष्टिकोण आज से 2300 वर्ष पहले यूनानी दर्शनशास्त्री विमाक्रातिस Vimacratis ने पेश किया था, विमाक्रातिस और उसके वैचारिक अनुयायी की संकल्पना थी कि, द्रव्य की न्यूनतम इकाई परमाणु है. प्राचीन अरब वासी भी इसी संकल्पना के समर्थक थ। अरबी शब्द 'ज़र्रा:अणु' का मतलब वही था, जिसे यूनानी 'ऐटम' कहते थे। निकटतम इतिहास में विज्ञान ने यह खोज की है कि, 'परमाणु' को भी विभाजित करना सम्भव है, परमाणु के विभाजन योग्य होने की कल्पना भी बीसवीं सदी की वैज्ञानिक सक्रियता में शामिल है। चौदह शताब्दि पहले अरबों के लिये भी यह कल्पना असाधारण होती। उनके समक्ष 'ज़र्रा' अथवा 'अणु' की ऐसी सीमा थी जिसके आगे और विभाजन सम्भव नहीं था, लेकिन पवित्र क़ुरआन की निम्नलिखित आयत में अल्लाह ने परमाणु सीमा को अंतिम सीमा मानने से इन्कार कर दिया है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَاتَاتِيْنَاالسَّاعَةُ قُلْ بَلٰى وَرَبِّىْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ
عٰلِمِ الْغَيْبِ لَايَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَافِىْ
الْاَرْضِ وَلَا اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَا اَكْبَرُ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٌ ۝

"मुनकरीन (विरोधी) कहते हैं: क्या बात है कि, क़यामत हम पर नहीं आ रही है? कहो!क़सम है मेरे अंतर्यामी परवरदिगार (परमात्मा) की, वह तुम पर आकर रहेगी, उस से अणु बराबर कोई वस्तु न तो आसमानों में छुपी हुई है न धरती पर. न अणु से बड़ी और न उस से छोटी! यह सबकुछ एक सदृश दफ़्तर में दर्ज है।"

(अल-क़ुरआन:सूर:34,आयत3)

विशेष: इस प्रकार का संदेश पवित्र क़ुरआन की सूर:10-आयत 61 में भी वर्णित है।

यह पवित्र आयत हमें अल्लाह तआला के आलिमुल-ग़ैब:अंतर्यामी होने, यानि प्रत्येक अदृश्य और सदृश्य वस्तु के संदर्भ से महाज्ञानी होने के बारे में बताती है, फिर यह आगे बढ़ती है और कहती है कि अल्लाह तआला हर चीज़ का ज्ञान रखते है, चाहे वह परमाणु से छोटी या बड़ी वस्तु ही क्यों न हो। तो प्रमाणित हुआ कि यह पवित्र आयत स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है कि, परमाणु से संक्षिप्त वस्तु भी अस्तित्व में है और यह एक ऐसा यथार्थ है जिसे अभी हाल ही में आधुनिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है।

❍❖❍

जल-विज्ञान
Hydrology

जल-चक्र

आज हम जिस संकल्पना को 'जल-चक्र:Water Cycle' नाम से जानते हैं, उसकी संस्थापना; 1580 ई० में बरनॉर्ड प्लेसी Bernard Placy ने की थी। उसने बताया--किस प्रकार समुद्रों से जल का वाष्पीकरण Evaporation होता है, और तत्पश्चात किस प्रकार वह ठंडा होकर बादलों के रूप में परिवर्तित होता है, फिर उसके बाद 'शुष्क:खुश्क' वातावरण में आगे की ओर उड़ते हुए, ऊंचाई की तरफ़ बढ़ता है, उसमें जल का 'संघनन:Condensation' होता है और वर्षा होती है। उसी वर्षा का पानी झीलों, झरनों, नदियों और नहरों में अपना आकार लेता है और अपनी गति से बहता हुआ वापिस समुद्र में चला जाता है. इसी प्रकार यह जल-चक्र जारी रहता है. सातवीं सदी ईसा पूर्व में थैल्ज़ Thelchz नामक एक यूनानी दार्शिनिक को विश्वास था कि सामुद्रिक धरातल पर एक बारीक जल-बूंदों की फुहार Spray उत्पनन होती है जिसे हवा उठा लेती है और खुश्की के दूर दराज़ क्षेत्रों तक ले जाकर वर्षा के रूप में छोड़ देती है, जिसे बारिश कहते हैं।

इसके अलावा, पुराने समय में; लोग यह भी नहीं जानते थे कि ज़मीन के नीचे पानी का स्रोत क्या है? उनका विचार था कि वायु

शक्ति के अंतर्गत समंदर का पानी उपमहाद्वीप (सूखी धरती) में भीतरी भागों में समा जाता है. उनका विश्वास था कि पानी एक गुप्त मार्ग से अथवा 'गहरेअंधेरे' Greet Abyss से आता है। समुद्र से मिला हुआ या काल्पनिक मार्ग प्लेटो-काल से 'टॉरटॉरस' कहलाता था, यहां तक कि अट्ठारहवीं सदी के महान चिंतक 'डिकारते Descartes' ने भी इन्हीं विचारों से सहमति व्यक्त की है।

उन्नीसवीं सदी ईसवी तक 'अरस्तू:Aristotle' का दृष्टिकोण ही अधिक प्रचलित रहा। उस दृष्टिकोण के अनुसार, पहाड़ों की बर्फ़ीली गुफ़ाओं में बर्फ़ के संघनन से पानी उत्पन्न होता है, इस प्रक्रिया को Condensation (रिस्ते हुए पानी का भंडारण) कहते हैं, जिससे वहां ज़मीन के नीचे झीले बनता है और जो पानी का मुख्य स्रोत (चश्म:) ह। आज हमें यह मालूम हो चुका है कि बारिश का पानी ज़मीन पर मौजूद दरारों के रास्ते बह-बह कर ज़मीन के नीचे पहुंचता है और चश्म: जलकुण्ड की उत्पत्ति होती है। पवित्र कुरआन में इस बिंदु की व्याख्या इस प्रकार है:

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۝

"क्या तुम नहीं देखते कि अललाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसको स्रोतों, चश्मों और दरियाओं के रूप में ज़मीन के अंदर जारी किया, फिर उस पानी के माध्यम से वह नाना प्रकार की खेतियां (कृषि) उत्पन्न करता है जो विभिन्न प्रजाति के हैं।"

(अल-कुरआन,सूर:39,आयत21)

يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيِ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

"आसमान से पानी बरसाता है फिर उसके माध्यम से धरती को उसकी 'मृत्यु' (बंजर होने) के बाद जीवन प्रदान करता है। यक़ीनन

उसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिये, जो विवेक से काम लेते हैं।"

(अल-कुरआन:सूर:30,आयत24)

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَآءً بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۝

"और आसमान से हम ने ठीक गणित के अनुकूल एक विशेष मात्रा में पानी उतारा और उसको धरती पर ठहरा दिया, हम उसे जिस प्रकार चाहें विलीन (ग़ायब) कर सकते हैं।"

(अल-कुरआन:सूर:23आयत18)

कोई दूसरा ग्रंथ, जो 1400 वर्ष पुराना हो, पानी के जलचक्र की ऐसी सटीक व्याख्या नहीं करता।

'वाष्पीकरण:Evaporation'

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

"क़सम है 'वर्षा' बरसाने वाले आसमान की।"

(अल-कुरआन:सूर:86,आयत-11)

वायु द्वारा बादलों का गर्भाधान:Impregnate:

وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۝

"और हम ही हवाओं को लाभदायक बनाकर चलाते हैं, फिर आसमान से पानी बरसाते और तुमको उससे 'तृप्त:सैराब' करते हैं।"

यहां अरबी शब्द 'लवाक़िह' का उपयोग किया गया है, जो 'लाक़िह' का बहुवचन है और 'लाक़िहा' का विशेषण है, अर्थात् 'बार-आवर' यानि 'भर देना' अथवा गर्भाधान। इसी वाक्यांश में 'बार-आवर' का तात्पर्य यह कि वायु बादलों को एक दूसरे के समीप ढकेलती हैं, जिसके कारण बादल के पानी में परिवर्तित होने की क्रिया गतिशील होती है, उक्त गतिशीलता के नतीजे में बिजली चमकने और

बारिश होने की घटना क्रिया होती है। कुछ इसी प्रकार के स्पष्टीकरण, पवित्र कुरआन की अन्य आयातों में भी मिलते हैं:

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِىْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝

"क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह बादल को धीरे-धीरे चलाता है, और फिर उसके टुकड़ों को आपस में जोड़ता है, फिर उसे समेट कर एक भारी अब्र (मेघ) बना देता है, फिर तुम देखते हो कि उसके ख़ोल (गिलाफ़) में से वर्षा की बुंदें टपकती चली आती है और वह आसमान से; उन पहाड़ों की बदौलत जो उसमें ऊंचे हैं; ओले बरसाता है, फिर जिसे चाहता है उससे नुक़सान पहुंचाता है और जिसे चाहता है उनसे बचा लेता है, उसकी बिजली की चमक निगाहों को आशचर्य से भर देती है।"

(अल-कुरआन:सूर:24,आयत-43)

اَللّٰهُ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِى السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا
فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝

"अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है और वह बादल उठाती हैं, फिर वह उन बादलों को आसमान में फैलाता है, जिस तरह चाहता है और उन्हें टुकड़ों में विभाजित कर देता है, फिर तुम देखते हो कि बारिश की बूंदें बादल में से टपकती चली आती हैं। यह बारिश जब वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है बरसाता है, तो अकस्मात् वे प्रसन्न चित्त हो जाते हैं"

(अलकुरआन:सूर30,आयत-48)

पवित्र कुरआन में वर्णित ऊपर चर्चित व्याख्या, जल विज्ञान Hydrology पर उप्लब्ध, नवीन अध्ययन की भी पुष्टि करते हैं। महान

ग्रंथ पवित्र कुरआन की विभिन्न आयतों में जल चक्र का वर्णन किया गया है, **उदाहरणतया:-** सूर:7आयत-57, सूर:13आयत-17, सूर:25आयत-48 से 49, सूर:35आयत-9, सूर:3आयत-34, सूर:45आयत-5, सूर:50आयत-9 से 11, सूर:56आयत-68 से 70 और सूर:67आयत-30.।

❍❖❍

भू-विज्ञान
Earth Science

तंबुओं के खूंटों की प्रकार, पहाड़

भू-विज्ञान में 'बल पड़ने' Folding की सूचना नवीनतम शोध का यथार्थ है। पृथ्वी के 'पटल:Crust' में बल पड़ने के कारणों से ही पर्वतों का जन्म हुआ। पृथ्वी की जिस सतह पर हम रहते हैं, किसी ठोस छिलके या पपड़ी की तरह है, जब कि पृथ्वी की भीतरी परतें Layers बहुत गर्म और गीली हैं, यही कारण है कि धरती का भीतरी भाग सभी प्रकार के जीव के लिये उपयुक्त नहीं है। आज हमें यह मालूम हो चुका है कि पहाड़ों की उत्थापना के अस्थायित्व Stability का सम्बंध, पृथ्वी की परतों में बल (दरार) पड़ने की क्रिया से बहुत गहरा है, क्योंकि यह पृथ्वी के पटल पर पड़ने वाले 'बल:Folds' ही हैं जिन्होंने ज़ंजीरों की तरह पहाड़ों को जकड़ रखा है।

भू-विज्ञान विशेषज्ञों के अनुसार पृथ्वी की 'अर्द्धव्यास:Radius' की आधी मोटाई यानि 6.035 किलो मिटर है और पृथ्वी के धरातल, जिसपर हम रहते हैं उसके मुक़ाबले में बहुत ही पतली है, जिसकी मोटाई 2 किलो मिटर से लेकर 35 किलो मीटर तक है, इसलिये इसके थरथराने या हिलने की सम्भावना भी बहुत असीम है, ऐसे में पहाड़ किसी तंबू के खूंटो की तरह काम करते हैं जो पृथ्वी के धरातल को थाम लेते हैं और उसे अपने स्थल पर अस्थायित्व प्रदान

करते हैं। पवित्र क़ुरआन भी यही कहता है:

اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ مِهٰدًا وَّالۡجِبَالَ اَوۡتَادًا ۝

"क्या यह घटना (वाक़िया) नहीं है कि हम ने पृथ्वी को फ़र्श बनाया और पहाड़ों को खूंटों की तरह गाड़ दिया।"

(अल-क़ुरआन:सूर78,आयात-6से7)

यहां अरबी शब्द 'औताद' का अर्थ भी 'खूंटा' ही निकलता है, वैसे ही खूंटे जैसा कि तंबुओं को बांधे रखने के लिये लगाए जाते हैं। पृथ्वी के दरारों Folds या सलवटों की हुई बुनियादें भी यहीं गहरे छुपी हैं।

Earth नामक अंग्रेज़ी किताब विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में भू-विज्ञान के बुनियादी उदाहरणों पर आधारित पाठ्यक्रम की पुस्तक है. इसके लेखकों में एक नाम डॉ० फ्रेंकप्रेस का भी है, जो 12 वर्षों तक अमरीका के विज्ञान-अकादमी के निदेशक रहे, जबकि पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति जिमीकार्टर के शासन काल में राष्ट्रपति के वैज्ञानिक सलाहकार भी थे. इस किताब में वह पहाड़ों की व्याख्या: कुल्हाड़ी के फल जैसे स्वरूप Wedge-shape से करते हुए बताते हैं कि, पहाड़ स्वयं एक व्यापकतम अस्तित्व का एक छोटा हिस्सा होता है जिसकी जड़ें पृथ्वी में बहुत गहराई तक उतरी होती हैं।

संदर्भ ग्रंथ: Earth, फ्रेंकप्रेस और सिल्वर, पृष्ठ 435,

Earth Science टॉरबुक और लिटकन्ज़, पृष्ठ 157,

डॉ० फ्रेंकप्रेस के अनुसार, पृथ्वी-पटल की मज़बूती और उत्थापना के अस्थायित्व में पहाड़ बहुत महत्पूर्ण भूमिका निभाते है।

पर्वतीय कार्यों की व्याख्या करते हुए, पवित्र क़ुरआन स्पष्ट शब्दों

में बताता है कि उन्हें इसलिये बनाया गया है, ताकि यह पृथ्वी को कम्पन से सुरक्षित रखें।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ

"और हम ने पृथ्वी में पहाड़ जमा दिये, ताकि वह उन्हे लेकर ढुलक न जाए।"

(अल-कुरआन:सूर:21,आयत-31)

इसी प्रकार का वर्णन सूर:31आयत-10, और सूर:16आयात-15, में भी अवतरित हुए हैं,- अत: पवित्र कुरआन के उप्लब्ध बयानों में आधुनिक भू-विज्ञान की जानकारियां पहले से ही मौजूद है।

पहाड़ों को मज़बूती से जमा दिया गया है

पृथ्वी की सतह अनगिनत ठोस टुकड़ों, यानि 'प्लेटा' में टूटी हुई है जिनकी औसतन मोटाई तक़रीबन 100 किलो मीटर है। यह प्लेटें, आंशिक रूप से पिघले हुए हिस्से पर मानो तैर रही हैं, उक्त हिस्से को 'उद्दीपक गोले:Aestheno Sphere' कहा जाता है। पहाड़ साधारणतया प्लेटों के बाहरी सीमा पर पाए जाते है। पृथ्वी का धरातल समुद्रों के नीचे 5 किलो मिटर मोटा होता है, जबकि सूखी धरती से सम्बद्ध प्लेट की औसत मोटाई 35 किलो मीटर तक होती है। अलबत्ता पर्वतीय श्रृंख्लाओं में पृथ्वी के धरातल की मोटाई 80 किलो मीटर तक जा पहुंचती है, यही वह मज़बूत बुनियादें है जिनपर पहाड़ खड़े हं। पहाड़ों की मज़बूत बुनियादों के विषय में पवित्र कुरआन ने कुछ यूं बयान किया है:

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا

"और पहाड़ इसमें उत्थापित किये (गाड़ दिये)।"

(अल-कुरआन:सूर:79,आयत-32)

इसी प्रकार का संदेश सूर: 88,आयत-19 में भी दिया गया है।

अत: यह प्रमाणित हुआ कि पवित्र कुरआन में पहाड़ों के आकार-प्रकार और उसकी उत्थापना के विषय में दी गई जानकारी, पूरी तरह आधुनिक काल के भू-वैज्ञानिक खोज और अनुसंधानों के अनुकूल है।

○❖○

समुद्र-विज्ञान
Oceanography

मीठे और खारे पानी के बीच 'आड़'

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ۝

"दो समंदरों को उसने छोड़ दिया कि परस्पर मिल जाएं, फिर भी उनके बीच एक पर्दा (दीवार) है जिसका वह उल्लंघन नहीं करते।"

(अल-कुरआन:सूर:55,आयत-19से20)

आप देख सकते हैं कि इन आयतों के अरबी वाक्यांशों में शब्द 'बरज़ख़' प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ रुकावट या दीवार है यानि Partition, इसी क्रम में एक अन्य अरबी शब्द 'मरज' भी आया है; जिसका अर्थ है: 'वह दोनों परस्पर मिलते और समाहित होते हैं'। प्रारम्भिक काल में पवित्र कुरआन के भाष्यकारों के लिये यह व्याख्या करना बहुत कठिन था कि पानी के दो भिन्न देह से सम्बंधित दो विपरीतार्थक आशयों का तात्पर्य क्या है? अर्थात् यह दो प्रकार के जल हैं जो आपस में मिलते भी हैं और उनके बीच दीवार भी है। आधुनिक विज्ञान ने यह खोज कर ली है कि जहां-जहां दो भिन्न समुद्र Oceans आपस में मिलते है वहीं वहीं उनके बीच 'दीवार' भी होती है। दो समुद्रों को विभाजित करने वाली दीवार यह है कि उनमें से एक समुद्र की 'लवणता:Salinity' यानि तापमान और रसायनिक अस्तित्व एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

(संदर्भ: Principles of Oceanography, Devis पृष्ठ 92-93)

आज समुद्र विज्ञान के विशेषज्ञ ऊपर वर्णित पवित्र आयतों की बेहतर व्याख्या कर सकते हैं। दो समुद्रों के बीच जल का अस्तित्व (प्राकृतिक गुणों के कारण) स्थापित होता है, जिससे गुज़र कर एक समंदर का पानी दूसरे समंदर में प्रवेश करता है तो वह अपनी मौलिक विशेषता खो देता है, और दूसरे जल के साथ 'समांगतात्मक मिश्रण:Homogeous Mixture' बना लेता है। यानि एक तरह से यह रुकावट किसी अंतरिम सममिश्रण क्षेत्र का काम करती है, जो दोनों समुद्रों के बीच स्थित होती है। इस बिंदु पर पवित्र कुरआन में भी बात की गई है:

اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

"और वह कौन है जिसने पृथ्वी को ठिकाना बनाया और उसके अंदर नदियां जारी कीं और उसमें (पहाड़ों की) खूंटियां उत्थापित कीं, और पानी के दो भण्डारों के बीच पर्दे बना दिये? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी (इन कार्यों में शामिल) है? नहीं, बल्कि उनमें से अकसर लोग नादान हं।"

(अल-कुरआन,सूर:27,आयात-61)

यह स्थिति असंख्य स्थलों पर घटित होती है जिनमें Gibralter के क्षेत्र में रोम-सागर और अटलांटिक महासागर का मिलन स्थल विशेष रूप से चर्चा के योग्य है। इसी तरह दक्षिण अफ्रीका में 'अंतरीप-स्थल:Cape Point' और 'अंतरीप प्रायद्वीप:Cape Peninsula' में भी पानी के बीच, एक उजली पट्टी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं जहां एक दूसरे से अटलांटिक महासागर और हिंद महासागर का मिलाप होता है। लेकिन जब पवित्र कुरआन ताज़ा और खारे पानी के मध्य दीवार या रुकावट की चर्चा करता है तो साथ-साथ एक 'वर्जित क्षेत्र' के बारे में भी बताता है:

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهٰذَا

مِلْحٌ اُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝

"और वही जिसने दो समुद्रों को मिला कर रखा है, एक स्वादिष्ट और मीठा, दूसरा कड़वा और नमकीन, और उन दोनों के बीच एक पर्दा है, एक रुकावट, जो उन्हें मिश्रित होने से रोके हुए है।"

(अल-क़ुरआन सूर:25,आयत-53)

आधुनिक विज्ञान ने खोज कर ली है कि साहिल के निकटस्थ समुद्री स्थलों पर जहां दरिया का ताज़ा मीठा और समुद्र का नमकीन पानी परस्पर मिलते हैं वहां का वातावरण कदाचित भिन्न होता हैं जहां दो समुद्रों के नमकीन पानी आपस में मिलते हैं। यह खोज हो चुकी है कि खाड़ियों के 'मुहाने या नदमुख:Estuaries' में जो वस्तु ताज़ा पानी को खारे पानी से अलग करती है वह 'घनत्व-उन्मुख क्षेत्र:Pycnocline Zone' है जिसकी बढ़ती-घटती रसायनिक प्राक्रिया मीठे और खारे पानी के विभिन्न परतों Layers को एक दूसरे से अलग रखती है।

(**संदर्भ:** Oceanography, ग्रूस:पृष्ठ 242 और Introductry Oceanography, थरमन:पृष्ठ 300 से 301)

रुकावट के इस पृथक क्षेत्र के पानी में नमक का अनुपात ताज़ा पानी और खारे पानी, दोनों से ही भिन्न होता है,

(**संदर्भ:** Oceanography, ग्रूस:पृष्ठ 244 और Introductry Oceanography, थरमन:पृष्ठ 300 से 301)

इस प्रसंग का अध्ययन कई असंख्य स्थलों पर किया गया है, जिसमें मिस्र Egypt की ख़ास चर्चा है जहां दरियाए नील, रोम सागर में गिरता है।

पवित्र क़ुरआन में वर्णित इन वैज्ञानिक प्रसंगों की पुष्टि 'डॉ० विलियम एच' ने भी की है जो अमरीका के कोलवाडोर यूनीवर्सिटी में समुद्र- विज्ञान और भू-विज्ञान के प्रोफ़ेसर हैं।

समुद्र की गहराइयों में अंधेरा

समुद्र विज्ञान और भू-विज्ञान के जाने-माने विशेषज्ञ प्रोफेसर दुर्गा राव जद्दा स्थित शाह अब्दुल अज़ीज़ यूनीवर्सिटी, सऊदी अरब में प्रोफ़ेसर रह चुके है। एक बार उन्हें निम्नलिखित पवित्र आयत की समीक्षा के लिये कहा गया:

اَوْ كَظُلُمَاتٍ فِىْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ
سَحَابٌ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ
يَرٰىهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ۝

"या फिर उसका उदाहरण ऐसा है जैसे एक गहरे समुद्र में अंधेरे के ऊपर एक मौज छाई हुई है, उसके ऊपर एक और मौज और उसके ऊपर बादल, अंधकार पर अंधकार छाया हुआ है, आदमी अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देखने पाए. अल्लाह जिसे नूर न बख़्शे; उसके लिये फिर कोई नूर नहीं।"

(अल-क़ुरआन:सूर:24,आयत-40)

प्रोफ़ेसर राव ने कहा- वैज्ञानिक अभी हाल में ही आधुनिक यंत्रों की सहायता से यह पुष्टि करने के योग्य हुए हैं कि समुद्र की गहराईयों में अंधकार होता है। यह मनुष्य के बस से बाहर है कि वह 20 या 30 मीटर से ज़्यादा गहराई में अतिरिक्त यंत्रों और समानों से लैस हुए बिना डुबकी लगा सक। इसके अतिरिक्त, मानव शरीर में इतनी सहन शक्ति नहीं है कि जो 200 मीटर से अधिक गहराई में पड़ने वाले पानी के दबाव का सामना करते हुए जीवित भी रह सके। यह पवित्र आयत तमाम समुद्रों की तरफ़ इशारा नहीं करती क्योंकि हर समुद्र को परत दर परत अंधकार का साझीदार क़रार नहीं दिया जा सकता, अलबत्ता यह पवित्र आयत विशेष रूप से गहरे समुद्रों की ओर आकर्षित करती है, क्योंकि पवित्र क़ुरआन की इस आयत में भी 'विशाल और गहरे समुद्र के अंधकार' का उदाहरण दिया

गया है, गहरे समुद्र का यह तह दर तह अंधकार दो कारणों का परिणाम है।

प्रथम: आम रौशनी की एक किरण सात रंगों से मिल कर बनती है। यह सात रंग क्रमश:, बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंजी, लाल (VIBGYOR) है. रौशनी की किरणें जब जल में प्रवेश करती हैं तो प्रतिछायांकन की क्रिया से गुज़रती हैं, ऊपर से नीचे की तरफ़ 10 से 15 मीटर के बीच जल में लाल रंग आत्मसात हो जाता है। इस लिये अगर कोई ग़ोताख़ोर पानी में पच्चीस मीटर की गहराई तक जा पहुंचे और ज़ख़्मी हो जाए तो वह अपने ख़ून में लाली नहीं देख पाएगा, क्योंकि लाल रंग की रौश्नी उतनी गहराई तक नहीं पहुंच सकती। इसी प्रकार 30 से 50 मीटर तक की गहराई आते-आते नीली रौशनी भी पूरे तौर पर आत्मसात हो जाती है, आसमानी रौश्नी 50 से 110 मीटर तक, हरी रौशनी 100 से 200 मीटर तक, पीली रौश्नी 200 मीटर से कुछ ज़्यादा तक जब कि नारंजी और बैंगनी रोशनी इस से भी कुछ अधिक गहराई तक पहुंचते-पहुंचते पूरे तौर पर विलीन हो जाती है। पानी में रंगों के इस प्रकार क्रमश: विलीन होने के कारण समुद्र भी परत-दर-परत अंधेरा करता चला जाता है, यानि अंधेरे का प्रकटीकरण भी रौशनी की परतों (Layers) के रूप में होता है। 1000 मीटर से अधिक की गहराई में पूरा अंधेरा होता है।

(संदर्भ: Oceans: एल्डर और प्रनिटा-पृष्ठ 27)

द्वितीय: धूप की किरणें बादलों में आत्मसात हो जाती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप रौशनी की किरणें इधर-उधर बिखेरती हैं, और इसी कारण से बादलों के नीचे अंधेरे की काली परत सी बन जाती है। यह अंधेरे की पहली परत है। जब रौशनी की किरणें समुद्र के तल से टकराती हैं तो वह समुद्री लहरों की परत से टकरा कर पलटती हैं और जगमगाने जैसा प्रभाव उत्पन्न करती हैं, अत: यह समुद्री लहरें जो रौशनी को प्रतिबिंबित करती हैं अंधेरा उत्पन्न करने का कारण बनती

हैं। ग़ैर-प्रतिबिंबित रौशनी, समुद्र की गहराईयों में समा जाती हैं, इस लिये समुद्र के दो भाग हो गये, परत के विशेष लक्षण प्रकाश और तापमान हैं, जब कि अंधेरा समुद्री गहराईयों का अनोखा लक्षण है, इसके अलावा समुद्र के धरातल और या पानी की सतह को एक दूसरे से महत्वपूर्ण बनाने वाली वस्तु भी लहरें ही ह। अंदरूनी मौजें समुद्र के गहरे पानी और गहरे जलकुण्ड का घेराव करती हैं क्योंकि गहरे पानी का वज़न अपने ऊपर (कम गहरे वाले) पानी के मुक़ाबले में ज़्यादा होता है। अंधेरे का साम्राज्य पानी के भीतरी हिस्से में होता है, इतनी गहराई में जहां तक मछलियों की नज़र भी नहीं पहुंच सकती, जबकि प्रकाश का माध्यम स्वयं मछलियों का शरीर होता है।

इस बात को पवित्र क़ुरआन बहुत ही तर्कसंगत वाक्यों में बयान करते हुए कहता है:

"उन अंधेरों के समान है, जो बहुत गहरे समुद्र की तह में हों; जिसे ऊपरी सतह की मौजों ने ढांप रखा हो"

दूसरे शब्दों में, उन लहरों के ऊपर कई प्रकार की लहरें हैं. यानि वह लहरें जो समुद्र की सतह पर पाई जाती हैं। इसी क्रम में पवित्र आयत का कथन है. **फिर ऊपर से बादल छाए हुए हों,** तातपर्य कि अंधेरे हैं जो **ऊपर की ओर परत-दर-परत हैं,** जैसी कि व्याख्या की गई है, यह बादल परत-दर-परत वह रुकावटें हैं जो विभिन्न परतों पर रौशनी के विभिन्न रंगों को आत्मासात करते हुए अंधेरे को व्यापक बनाती चली जाती है।

प्रोफ़ेसर दुर्गा राव ने यह कहते हुए अपनी बात पूरी की **"1400 वर्ष पूर्व कोई साधारण मानव इस बिंदु पर इतने विस्तार से विचार नहीं कर सकत था, इस लिये यह ज्ञान अनिवार्य रूप से किसी विशेष प्राकृतिक माध्यम से ही आया प्रतीत होता है।"**

وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِیْرًا ۝

"और वही है जिसने पानी से एक मानव पैदा किया, फिर उससे

पीढ़ियां और ससुराल के दो पृथक कुल-गोत्र (सिलसिले) चलाए. तेरा रब बड़े ही अधिकारों वाला है।"

(अल-कुरआन:सूर:25,आयत-54)

क्या यह सम्भव था कि चौदह सौ वर्ष पहले कोई भी इंसान यह अनुमान लगा सके कि हर एक जीव-जन्तु पानी से ही अस्तित्व में आई है? इसके अलावा क्या यह सम्भव था कि अरब के रेगिस्तानों से सम्बंध रखने वाला कोई व्यक्ति ऐसा कोई अनुमान स्थापित कर लेता? वह भी ऐसे रेगिस्तानों का रहने वाला जहां पानी का हमेशा अभाव रहता हा।

❍❖❍

वनस्पति-विज्ञान
Botany

नर और मादा पौधे

प्रचीन काल के मानवों को यह ज्ञान नहीं था कि पौधों में भी जीव-जन्तुओं की तरह नर (पुरुष) मादा (महिला) तत्व होते हैं। अलबत्ता आधुनिक वनस्पति-विज्ञान यह बताता है कि पौधे की प्रत्येक प्रजाति में नर एवं मादा लिंग होते हैं। यहां तक कि वह पौधे जो उभय लिंगी (Unisexual) होते हैं उनमें भी नर और मादा की विशिष्टताएं शामिल होती हैं।

وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝

"और ऊपर से पानी बरसाया और फिर उसके द्वारा अलग-अलग प्रकार की पैदावार (जोड़ा) निकाला।"

(अल-कुरआन,सूर:20,आयत-53)

फलों में नर और मादा का अंतर

وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۝

"उसी ने हर प्रकार के फलों के जोड़े पैदा किये हैं।"

(अल-कुरआन,सूर:20,आयत-53)

उच्च स्तरीरय पौधों:Superior Plants में नस्लीय उत्पत्ति की आख़िरी पैदावार और उनके फल:Fruits होते हैं। फल से पहले फूल बनते हैं जिसमें नर और मादा 'अंगों:Organs' यानि 'पुंकेसर:Stamens' और 'डिम्ब:Ovules' होते हैं जब कोई Pollen:ज़रदाना:पराग यानि प्रजनक-वीर्य कोंपलों से होता हुआ फूल की अवस्था तक पहुंचता है,

तभी वह फल में परिवर्तित होने के योग्य होता है, यहां तक कि फल पक जाए और नयी नस्ल को जन्म देने वाले बीज बनने की अवस्था प्राप्त कर ले। इस लिये सारे फल इस बात का प्रमाण हैं कि पौधों में भी नर और मादा जीव होते हैं। फूल की नस्ल भी वनस्पति है, वनस्पति भी एक जीव है और इस सच्चाई को पवित्र क़ुरआन बहुत पहले बयान कर चुका है:

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝

"और हर वस्तु के हम ने जोड़े बनाए हैं शायद कि तुम इससे सबक़ लो।"

(अल-क़ुरआन,सूर:51,आयत-49)

पौधों के कुछ प्रकार अनुत्पादक:non-Fertilized फूलों से भी फल बन सकते हैं, जिन्हें Porthenocarpic Fruit: पौरुष-विहीन फल कहते हैं। ऐसे फलों में केले,अनन्नास,इंजीर,नारंगी और अंगूर आदि की कई नस्लें हैं। यद्यपि उन पौधों में प्रजनन-चरित्र:Sexual Characterstics मौजूद होता है।

प्रत्येक वस्तु को जोड़ों में बनाया गया है

इस पवित्र आयत में प्रत्येक 'वनस्पति' के जोड़ों में बनाए जाने की प्रामाणिकता बयान की गई ह। मानवीय जीवों, पाश्विक जीवों, वानस्पतेय जीवों, और फलों के अलावा बहुत सम्भव है कि यह पवित्र आयत उस बिजली की ओर भी संकेत कर रही हो जिसमें 'नकारात्मक ऊर्जा:Negetive Charge' वाले इलेकट्रॉनों और 'सकारात्मक ऊर्जा:Positve Charge' वाले केंद्रों पर आधारित होते हैं, इनके अलावा भी अन्य जोड़े हो सकते हैं।

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

"पाक है वह ज़ात (अल्लाह) जिसने सारे प्राणियों के जोड़े पैदा किये, चाहे वह धरती के वनस्पतियों में से हों या स्वयं उनकी अपने जैविकीय नस्ल में से या उन वस्तुओं में से जिन्हें यह जानते तक नही।"

(अल-क़ुरआन,सूर36,आयत-36)

यहां अल्लाह फ़रमाता है कि हर चीज़ जोड़ों के रूप में पैदा की गई है, जिनमें ऐसी वस्तुएं भी शामिल हैं जिन्हें आज का मानव नहीं जानता और हो सकता है कि आने वाले कल में उसकी खोज करले।

❍❖❍

जीव-विज्ञान
Zoology

पशुओं और परिंदों का समाजी जीवन

وَمَامِنْ دَابَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَاطٰئِرَ يَطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّا اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ
مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ٥

"धरती पर चलने वाले किसी पशु और हवा में परों से उड़ने वाले किसी परिंदे को देख लो, यह सब तुम्हारे ही जैसी नस्लें हैं और हम ने उनका भाग्य लिखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है; फिर यह सब अपने रब की ओर समेटे जाते हैं।"

(अल-कुरआन,सूर:6,आयत-38)

शोध से यह भी प्रमाणित हो चुका है कि, पशु और परिंदे भी 'समुदायों:Communitities' के रूप में रहते हैं। अर्थात् उनमें भी एक 'सांगठनिक आचार व्यवस्था' होती है। वह मिल जुल कर रहते और काम भी करते हैं।

परिन्दों की उड़ान

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِىْ جَوِّالسَّمَآءِ مَايُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّمِنُوْنَ ٥

"क्या उन लोगों ने कभी परिन्दों को नहीं देखा कि आकाश मण्डल में किस प्रकार सुरक्षित रहते हैं, अल्लाह के सिवा किसने उनको थाम रखा है? इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।"

(अल-कुरआन:सूर:16,आयत-79)

एक और आयत में परिन्दों पर कुछ इस अंदाज़ से बात की गई है:

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَّيَقْبِضْنَ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيْرٌ ٥

"यह लोग अपने ऊपर उड़ने वाले परिन्दों को पर फैलाते और सुकेड़ते नहीं देखते? 'रहमान' के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो वही प्रत्येक वस्तु का निगहबान है।"

(अल-कुरआन:सूरह:79,आयत-19)

अरबी शब्द 'अमसक' का 'शाब्दिक अर्थ' है: किसी के हाथ में हाथ देना, रोकना, थामना, या किसी की कमर पकड़ लेना। उपर्युक्त आयात में 'युमसिकुहुन्न' की अभिव्यक्ति है कि, अल्लाह तआला अपनी प्रकृति और अपनी शक्ति से परिन्दों को हवा में थामे रखता है। इन पवित्र रब्बानी आयतों में इस सत्य पर ज़ोर दिया गया है कि परिन्दों की कार्य क्षमता पूर्णतया उन विधानों पर निर्भर है जिसकी रचना अल्लाह तआला ने की और जिन्हें हम प्राकृतिक नियमों के नाम से जानते हैं।

आधुनिक विज्ञान से यह भी प्रमाणित हो चुका है कि कुछ परिन्दों में उड़ान की बेमिसाल और दोषमुक्त क्षमता का सम्बंध उस व्यापक और संगठित 'योजनाबंदी:Programming' से है जिसमें परिन्दों के दैहिक कार्य शामिल हैं। जैसे हज़ारों मील दूर तक स्थानान्तरण:Transfer करने वाले परिन्दों की 'प्रजनन प्रक्रिया:Genetic Codes' में उनकी यात्रा का सारा विवरण मौजूद है, जो उन परिन्दों को उड़ान के योग्य बनाती है और यह कि वह अल्प आयु में भी लम्बी यात्रा के किसी अनुभव के बिना, और किसी शिक्षक या रहनुमा के बिना ही हज़ारों मील की यात्रा तय कर लेते हैं, और अन्जान रास्तों से उड़ान करते चले जाते हैं. बात यात्रा की एकतरफ़ा समाप्ति पर ही ख़त्म नहीं होती बल्कि वे सब परिन्दे एक नियत तिथि और समय पर अपने अस्थाई घर से उड़ान भरते हैं और हज़ारों मील

वापसी की यात्रा करके एक बार फिर अपने घोंसलों तक बिल्कुल ठीक-ठीक जा पहुंचते हैं।

प्रोफेसर हॅम्बर्गर ने अपनी किताब 'पावर एण्ड फ़ीजिलिटी' में 'मटन बर्ड' नामक एक परिन्दे का उदाहरण दिया है जो प्रशान्त महासागर के इलाक़ों में पाया जाता है. स्थानान्तरण करने वाले ये पक्षी 24000 कि०मी० की दूरी 8 के आकार में अपनी परिक्रमा से पूरी करते हैं। ये परिन्दे अपनी यात्रा छह महीने में पूरी करते हैं और प्रस्थान बिंदु तक अधिक से अधिक एक सप्ताह विलम्ब से वापिस पहुंच जाते हैं। ऐसी किसी यात्रा के लिये बहुत ही जटिल जानकारी का होना आनिवार्य है जो उन परिन्दों की विवेक कोशिकाओं में सुरक्षित होनी चाहिए। यानि एक नीतीबद्ध कार्यक्रम परिन्दे के मस्तिष्क में और उसे पूरा करने की शक्ति शरीर में उप्लब्ध होती है। अगर परिन्दे में कोई प्रोग्राम है तो क्या इससे यह ज्ञान नहीं मिलता कि इसे आकार देने वाला कोई 'प्रोग्रामर' भी यक़ीनन है?

शहद की मक्खी और उसकी योग्यता

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝ ثُمَّ كُلِىْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

"और देखो तुम्हारे रब ने मधुमक्खी पर यह बात 'वह्य:ख़ुदाई आदेश' कर दी कि पहाड़ों में और वृक्षों और छप्परों पर चढ़ाई हुई लताओं में, अपने छत्ते बना और हर प्रकार के फलों का रस चूस और अपने रब द्वारा 'हमवार:तैयार' राहों पर चतली रह। उस मक्खी के अंदर से रंग-बिरंगा एक शर्बत निकलता है जिस में 'शि फ़ा:कल्याण' है लोगों के लिये, यक़ीनन उसमें भी एक निशानी है उन लोगों के लिये जो विचार-चिंतन करते है।"

(अल-कुरआन:सूर:16,आयात-68-69)

वॉनफ़र्श ने मधुमक्खियों की कार्य विधि और उनमें 'संपर्क व

संप्रेषण: Communication' के शोध पर 1973 ई० का नोबुल पुरस्कार प्राप्त किया है। यदि किसी मधुमक्खी को जब कोई नया बाग़ या फूल दिखाई देता है तो वह अपने छत्ते में वापिस जाती है और अपने संगठन की अन्य सभी मधुमक्खियों को उस स्थल की दिशा और वहां पहुंचाने वाले मार्ग के विस्तृत नक्शे से आगाह करती है। मधुमक्खी, संदेशा पहुंचाने या संप्रेषण का यह काम एक विशेष प्रकार की शारिरिक गतिविधि से लेती है जिन्हें मधुमक्खी नृत्य:Bee Dance' कहा जाता है। ज़ाहिर है कि यह कोई साधारण नृत्य नहीं होता बल्कि इसका उद्देश्य मधु की 'कामगार मक्खियां:Worker Bees' को यह समझाना होता है कि फल किस दिशा में हैं और उस स्थल तक पहुंचने के लिये उन्हें किस तरह की उड़ान भरनी होगी। यद्यपि मधुमक्खियों के बारे में सारी जानकारी हम ने आधुनिक तकनीकी छायांकन और दूसरे जटिल अनुसंधानों के माध्यम से ही प्राप्त की है, लेकिन आगे देखिये कि उपरोक्त पवित्र आयतों में पवित्र महाग्रंथ क़ुरआन ने कैसी स्पष्ट व्याख्या के साथ बताया है कि अल्लाह तआला ने मधुमक्खी को विशेष प्रकार की योग्यता, निपुणता और क्षमता प्रदान की है, जिस से परिपूर्ण होकर वह अपने रब के बताए हुए रास्ते को तलाश कर लेती है और उस पर चल पड़ती है। एक और ध्यान देने योग्य बात यह है कि उपरोक्त पवित्र आयत में मधुमक्खी को मादा मकोड़े के रूप में रेखांकित किया गया है, जो अपने भोजन की तलाश में निकलती है; अन्य शब्दों में सिपाही या कामगार मधुमक्खियां भी मादा होती हैं।

एक दिलचस्प यथार्थ यह है कि शेक्सपियर के नाटक 'हेन्री दि फ़ोर्थ' में कुछ पात्र मधुमक्खियों के बारे में बाते करते हुए कहते है कि शहद की मक्खियां सिपाही होती हैं और यह उनका राजा होता है। ज़ाहिर है कि शेक्सपियर के युग में लोगों का ज्ञान सीमित था, वे समझते थे कि कामगार मक्खियां 'नर' होती हैं और वे मधु के राजा

मक्खी 'नर' के प्रति उत्तरदायी होती हैं, परंतु यह सच नहीं. शहद की कामगार मक्खियां मादा होती हैं और शहद की बादशाह मक्खी 'राजा मक्खी' को नहीं, 'रानी मक्खी' को अपने कार्य-निषपादन की रपट पेश करती हैं। अब इस बारे में क्या कहा जाए कि पिछले 300 वर्ष के दौरान होने वाले आधुनिक अनुसंधानों के आधार पर ही हम यह सब कुछ आपके सामने खोज कर ला पाए हैं।

मकड़ी का जाला:अस्थायी घर

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

"जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरे संरक्षक बना लिये हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है, जो अपना घर बनाती हैं और सब घरों से ज़्यादा 'कमज़ोर घर' मकड़ी का घर होता है। काश यह लोग ज्ञान रखत।"

(अल-कुरआन:सूर:29,आयत-41)

मकड़ी के जाले को नाज़ुक और कमज़ोर मकान के रूप में रेखांकित करने के अलावा, पवित्र कुरआन ने मकड़ी के घरेलू सम्बंधों के कमज़ोर, नाज़ुक और अस्थाई होने पर ज़ोर दिया है। यह सही भी है, क्योंकि अधिकतर ऐसा होता है मकड़ी अपने 'नर:Mate' को मार डालती है। यही उदाहरण ऐसे लोगों की कमज़ोरियों की ओर संकेत करते हुए भी दिया गया है जो दुनिया और आख़िरत:परलोक में सुरक्षा व सफ़लता प्राप्ति के लिये अल्लाह को छोड़ कर दूसरों से आशा रखते हैं।

चींटियों की जीवनशैली और परस्पर सम्पर्क

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

"पैग़म्बर सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिये जिन्नातों, इंसानों, परिन्दों की सेनाएं संगठित की गई थीं और वह व्यवस्थित विधान के अंतर्गत रखे जाते थे, एक बार वह उनके साथ जा रहा था यहां तक कि

जब तमाम सेनाएं चींटियों की वादी में पहुंचीं तो एक चींटी ने कहा: "ए चींटियों! अपने बिलों में घुस जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलेमान और उसकी सेना तुम्हें कुचल डालें और उन्हें पता भी न चले।"

(अल-कुरआन:सूर:27,आयात-17-18)

हो सकता है कि अतीत में कुछ लोगों ने पवित्र कुरआन में चींटियों की उपरोक्त वार्ता देख कर उस पर टिप्पणी की हो और कहा हो कि चींटियां तो केवल कहानियों की किताबों में ही बातें करती हैं। अलबत्ता निकटतम वर्षों में हमें चींटियों की जीवन शैली, उनके परस्पर सम्बंध और अन्य जटिल अवस्थाओं का ज्ञान हो चुका है। यह ज्ञान आधुनिक काल से पूर्व के मानव समाज को प्राप्त नहीं था। अनुसंधान से यह रहस्य भी खुला है कि वह 'जीव:कीट-पतंग, कीड़-मकोड़े जिनकी जीवन शैली मानव समाज से असाधारण रूप से जुड़ी है, वह चींटियां ही हैं। इसकी पुष्टि चींटियों के बारे में निम्नलिखित नवीन अनुसंधानों से भी होती है:

क. चींटियां भी अपने मृतकों को मानव समाज की तरह दफ़नाती हैं।

ख. उनमें कामगारों के विभाजन की पेचीदा व्यवस्था है जिसमें मैनेजर, सुपरवाईज़र, फ़ोरमैन और मज़दूर आदि शामिल हैं।

ग. कभी कभार वह आपस में मिलती है और 'बातचीत:Chat' भी करती हैं।

घ. उनमें विचारों का परस्पर आदान प्रदान Communication की विकसित व्यवस्था मौजूद है।

च. उनकी कॉलोनियों में विधिवत बाज़ार होते हैं जहां वे अपने वस्तुओं का विनिमय करती हैं।

छ. सर्द मौसम में लम्बी अवधि तक भूमिगत रहने के लिये वह अनाज के दानों का भंडारण भी करती हैं, और यदि कोई दाना फूटने लगे, यानि पौधा बनने लगे तो वह फ़ौरन उसकी जड़ें काट देती हैं।

जैसे उन्हें यह पता हो कि अगर वह उक्त दाने को यूंही छोड़ देंगी तो वह विकसित होना प्रारम्भ कर देगा। अगर उनका सुरक्षित किया हुआ अनाज भंडार किसी भी कारण से उदाहरण स्वरूप वर्षा में गीला हो जाए तो वह उसे अपने बिल से बाहर ले जाती हैं और धूप में सुखाती हैं। जब अनाज सूख जाता है तभी वह उसे बिल में वापस ले जाती हैं। यानि यूं लगता है, जैसे उन्हें यह ज्ञान हो कि नमी के कारण अनाज के दाने से जड़ें निकल पड़ेंगी जिसके कारण वह दाने खाने के योग्य नहीं रह जाएंगे।

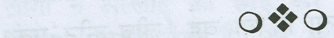

चिकित्सा-विज्ञान
Medical Science

'मधु:शहद:' मानवजाति के लिये 'शिफ़ा:रोग मुक्ति'

शहद की मक्खी कई प्रकार के फूलों और फलों का रस चूस्ती हैं और उसे अपने ही शरीर के अंदर शहद में परिवर्तित करती हैं। इस शहद यानि मधु को वह अपने छत्ते के बने घरों:Cells में इकट्ठा करती हैं। आज से केवल कुछ सदी पहले ही मनुष्य को यह ज्ञात हुआ कि मधु वास्तव में मधुमक्खियों के पेट:Belly से निकलता है, किन्तु प्रस्तुत यथार्थ पवित्र क़ुरआन ने 1400 वर्ष पहले ही निम्न पवित्र आयत में बयान कर दी थीं:

ثُمَّ كُلِّي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

"हर प्रकार के फलों का रस चूस, और अपने रब द्वारा तैयार किए हुए मार्ग पर चलती रह। उस मक्खी के अंदर से एक रंग बिरंगा शरबत निकलता है, जिसमें शिफ़ा:रोगमुक्ति है लोगों के लिये। यक़ीनन उसमें भी एक निशानी है उन लोगों के लिये जो चिंतन-मनन करते हैं।"

(अल-क़ुरआन:सूर:16,आयत-69)

इसके अलावा हम ने हाल ही में यह खोज निकाला है कि मधु में शिफ़ा बख़्शा (रोगमुक्त करने वाली) विशेषताएं पाई जाती हैं और यह मध्यम वर्गीय गंद-त्याग Miled Anticetic का काम भी करती ह। दूसरे विश्व युद्ध में रूसियों ने भी अपने घायल सैनिकों के घाव ढांपने के

लिये मधु का उपयोग किया था। मधु की विशेषता है कि यह नमी को यथावत रखता है और 'कोशिकाओं:Cells' पर घावों के निशान बाक़ी नहीं रहने देता है। मधु की 'सघनता:Density' के कारण कोई फफूंदी, किटाणु, न तो घाव में स्वयं विकसित होंगे और न ही घाव को बढ़ने देंगे।

सिस्टर किरॉल नामक के एक ईसाई राहिबा:मठवासिनी:Nun ने ब्रितानी चिकित्साल्यों में छाती और इल्ज़ाईमर के रोगों में मुब्तला22 चिकित्सा विहीन रोगियों का इलाज मधुमक्खी के छत्तों:Propolis नामक द्रव्य से किया। यह द्रव्य मधुमक्खियां उत्पन्न करती हैं और उसे अपने छत्तों में किटाणुओं के विरुद्ध सील-बंद करने के लिये उपयोग में लाती हैं।

यदि कोई व्यक्ति किसी पौधे से होने वाली एलर्जी से ग्रस्त होजाए तो उसी पौधे से प्राप्त मधु उस व्यक्ति को दिया जा सकता है ताकि वह एलर्जी के विरुद्ध रुकावट उत्पन्न करले। मधु विटामिन-के. और फ़्रिक्टोज़ (एक प्रकार की चीनी) से भी परिपूर्ण होता है।

पवित्र क़ुरआन में मधु, उसकी उत्पत्ति और विशेषताओं के बारे में जो ज्ञान दिया गया है उसे मानव समाज पवित्र क़ुरआन के अवतरण के सदियों बाद, अपने अनुसंधानों और प्रयोगों के आधार पर आज खोज सका है।

○❖○

शरीर-रचना विज्ञान
Physiology

रक्त प्रवाह (Blood Circulation) और दूध

पवित्र क़ुरआन का अवतरण, रक्त प्रवाह की व्याख्या करने वाले प्रारम्भिक मुसलमान वैज्ञानिक 'इब्न अन-नफ़ीस' से 600 वर्ष पहले और इस खोज को पश्चिम में परिचित करवाने वाले 'विलियम हॉरवे' से 1000 वर्ष पहले हुआ था। तक़रीबन 1300 वर्ष पहले यह मालूम हो चुका था कि आंतों के अंदर ऐसा क्या कुछ होता है, जो पाचन व्यवस्था में अंजाम पाने वाली क्रिया द्वारा शारिरिक अंगों के विकास की गारंटी उपलब्ध कराता है। पवित्र क़ुरआन की एक पवित्र आयत, जो दुग्ध-तत्वांशों के स्रोत की पुष्टि करती है; इस कल्पना के अनुकूल है।

उपरोक्त संकल्पना के संदर्भ से पवित्र क़ुरआनी आयतों को समझने के लिये यह जान लेना महत्वपूर्ण है कि आंतों में रसायनिक प्रतिक्रियाएं:Reactions घटित होते रहती हैं और आंतों द्वारा ही पाचन क्रिया से गुज़र कर आहार से प्राप्त द्रव्य एक जटिल व्यवस्था से होते हुए रक्त प्रवाह क्रिया में शामिल होते हैं। कभी वह द्रव्य जिगर से होकर गुज़रते हैं जो रसायनिक तरकीब पर निर्भर होते हैं। ख़ून उन तत्वों (द्रव्यों) को तमाम अंगों तक पहुंचाता है, जिनमें दूध उत्पन्न करने वाली छातियों की कोशिकाएं भी शामिल हैं।

साधारण शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आंतों में अवस्थित आहार के कुछ द्रव्य आंतों की दीवार से प्रवेश करते हुए रक्त की नलियों:Vessels में प्रवेश कर जाते हैं, और फिर रक्त के माध्यम से

यह रक्त प्रवाह द्वारा कई अंगों तक जा पहुंचते हैं. शारीरिक रचना की यह संकल्पना सम्पूर्ण रूप से हमारी समझ में आजाएगी यदि हम पवित्र क़ुरआन की निम्नलिखत आयातों को समझने की कोशिश करेंगे:

وَاِنَّ لَكُمُ الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ من بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشّٰرِبِيْنَ ۝

"और तुम्हारे लिये मवेशियों में भी एक सबक़ (सीख) मौजूद है, उनके पेट से गोबर और ख़ून के बीच हम एक चीज़ तुम्हें पिलाते हैं, यानि ख़ालिस दूध, जो पीने वालों के लिये बहुत स्वास्थ्य वर्द्धक है।"

(अल-क़ुरआन:सूर:16,आयत-66)

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝

"और यथार्थ यह है कि तुम्हारे लिये मवेशियों में भी एक सबक़ है। उनके पेटों में जो कुछ है उसी में से एक चीज़ (यानि दूध) हम तुम्हें पिलाते हैं और तुम्हारे लिये उनमें बहुत से लाभ भी हैं, उनको तुम खाते हो।"

(अल-क़ुरआन:सूर:23,आयत-21)

1400 वर्ष पूर्व, पवित्र क़ुरआन द्वारा दी हुई यह व्याख्या जो गाय के दूध की उत्पत्ति के संदर्भ से है, आशचर्यजनक रूप से आधुनिक शरीर रचना विज्ञान से परिपूर्ण है जिसने इस वास्तविक्ता को इस्लाम के आगमन के बहुत बाद अब खोज निकाला ह।

❍❖❍

भ्रूण-विज्ञान
Embryology

मुसलमान जवाबों (उत्तर) की तलाश में

यमन के प्रसिद्ध ज्ञानी, शैख़ अब्दुल मजीद अल-ज़न्दानी के नेतृत्व में मुसलमान स्कॉलरों के एक समूह ने भ्रूण-विज्ञान **Embryology** और दूसरे वैज्ञानिक विषयों के बारे में पवित्र क़ुरआन और विश्वस्नीय हदीस ग्रंथों से जानकारियां इकट्ठी की और उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। फिर उन्होंने पवित्र क़ुरआन की एक सलाह पर काम किया:

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِىْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

"ऐ पैग़म्बर! हमने तुमसे पहले भी जब कभी रसूल संदेशवाहक, भेजे हैं आदमी ही भेजे हैं जिनकी तरफ़ हम अपने संदेश को 'वह्य' किया करते थे. सारे चर्चा करने वालों से पूछ लो अगर तुम स्वयं नहीं जानते।"

(अल-क़ुरआन:सूर:16,आयत-43)

जब पवित्र क़ुरआन और प्रामाणिक हदीसों से भ्रूण-विज्ञान के बारे में प्राप्त की गई जानकारी एकत्रित होकर अंग्रेज़ी में अनुदित हुई, तो उन्हें प्रोफ़ेसर डॉ० कैथमूर के सामने पेश किया गया। डॉ० कैथमूर, टोरॉन्टो विश्वविद्यालय, कनाडा में शरीर-रचना विज्ञान विभाग के संचालक और भ्रूण-विज्ञान के प्रोफ़ेसर हैं। आज कल वह प्रजनन विज्ञान के क्षेत्र में अधिकृत विज्ञान की हैसियत से विश्व विख्यात व्यक्ति हैं। उनसे कहा गया है कि वह उनके समक्ष प्रस्तुत शोध-पत्र पर अपनी प्रतिक्रिया दें। गम्भीर अध्ययन के बाद डॉ० कैथमूर ने कहा--"भ्रूण के संदर्भ से क़ुरआन की आयतों और हदीस के ग्रंथों में बयान की गई तक़रीबन तमाम जानकारियां, ठीक आधुनिक विज्ञान की

खोजों के अनकूल हैं। आधुनिक प्रजनन विज्ञान से उनकी भरपूर सहमति है और वह किसी भी तरह आधुनिक प्रजनन विज्ञान से असहमत नहीं हैं। उन्होंने आगे बताया कि अलबत्ता कुछ आयतें ऐसी भी हैं जिनकी वैज्ञानिक विश्वस्नीयता के बारे में वह कुछ नहीं कह सकते। वह यह नहीं बता सकते कि वह आयतें, विज्ञान की अनुकूलता में सही अथवा ग़लत, हैं क्योंकि खुद उन्हें उन आयतों में दी गई जानकारी के संदर्भ का कोई ज्ञान नही। उनके संदर्भ से प्रजनन के आधुनिक अध्ययन और शोध पत्रों में भी कुछ उप्लब्ध नहीं था।" ऐसी ही एक पवित्र आयत निम्नलिखित है:

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّکَ الَّذِی خَلَقَ ۚ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ

"पढ़ो (ऐ नबी) अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, जमे हुए रक्त के एक थक्के से मानव जाति की उतपत्ती की।"

(अल-कुरआन:सूर96,आयात-1से2)

यहां अरबी शब्द 'अलक़' प्रयुक्त हुआ है जिसका एक अर्थ तो 'रक्त का थक्का' है, जब कि दूसरा अर्थ कोई ऐसी वस्तु है जो 'चिपट' जाती हो, यानि जोंक जैसी कोई वस्तु. डॉ० कैथमूर को ज्ञान नहीं था कि गर्भ के प्रारम्भ में 'भ्रूण:Embryo' का स्वरूप जोंक जैसा होता है या नहीं। यह मालूम करने के लिये उन्होनें बहुत शक्तिशाली और अनुभूतिशील यंत्रों की सहायता से 'भ्रूण:Embryo' के प्रारिम्भक स्वरूप का एक और गम्भीर अध्ययन किया। तत्पश्चात उन चित्रों की तुलना जोंक के चित्रांकन से की, वह उन दोनों के मध्य असाधारण समानता देख कर आश्चर्यचकित रह गये। इसी प्रकार उन्होंने भ्रूण-विज्ञान के बारे में अन्य जानकारियां भी प्राप्त की जो पवित्र कुरआन से ली गयी थी और अब से पहले वह इस से परिचित नहीं थे।

भ्रूण के बारे में ज्ञान से संबंधित जिन प्रश्नों के उत्तर डॉ० कैथमूर ने कुरआन और हदीस से प्राप्त सामग्री के आधार पर दिये उनकी संख्या 80 थी। कुरआन व हदीस में प्रजनन की प्रकृति से संबंधित उप्लब्ध ज्ञान केवल आधुनिक ज्ञान से परस्पर सहमत ही नहीं बल्कि डॉ० कैथमूर अगर आज से तीस वर्ष पहले मुझसे यही सारे प्रश्न

करते, तो वैज्ञानिक जानकारी के आभाव में; मैं इनमें से आधे प्रश्नों के उत्तर भी नहीं दे सकता था।

1981ई० में दम्माम (सऊदी अरब) में आयोजित 'सप्तम चिकित्सा सम्मेलन' में डॉ० मूर ने कहा- "मेरे लिये बहुत ही प्रसन्नता की स्थिति है कि मैंने पवित्र कुरआन में उप्लब्ध, 'गर्भावधि में मानव के विकास' से सम्बंधित सामग्री की व्याख्या करने में सहायता की। अब मुझपर यह स्पष्ट हो चुका है कि यह सारा विज्ञान पैग़म्बर मुहम्द स.अ.व. तक खुदा या अल्लाह ने ही पहुंचाया है क्योंकि कमोबेश यह सारा ज्ञान, पवित्र कुरआन के अवतरण के कई सदियों बाद ढूंढ़ा गया था। इससे भी सिद्ध होता है कि मुहम्मद निस्संदेह अल्लाह के रसूल:संदेशवाहक ही थे।"

इस घटना से पूर्व डॉ० कैथमूर 'The Developing Human: विकाशील मानव' नामक पुस्तक लिख चुके थे। पवित्र कुरआन से नवीन ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद उन्होंने 1982ई० में इस पुस्तक का तीसरा संस्करण तैयार किया। उस संस्करण को वैश्विक शाबाशी और ख्याति मिली और उसे वैश्विक धरातल पर सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पुस्तक का सम्मान भी प्राप्त हुआ। उस पुस्तक का अनुवाद विश्व की कई बड़ी भाषाओं में किया गया और उसे चिकित्सा विज्ञान पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में चिकित्सा शास्त्र के विद्यार्थियों को अनिवार्य पुस्तक के रूप में पढ़ाया जाता है।

डॉ० जोहम्पसन, बेलर कॉलिज ऑफ़ मेडिसिन, ह्यूस्टन,अमरीका में 'गर्भ एवं प्रसव विभाग:Obstearics and Gynaecology' के अध्यक्ष हैं। उनका कथन है-"यह मुहम्मद स.अ.व. की हदीस में कही हुई बातें, किसी भी प्रकार लेखक के काल, 7वीं सदीई० में उप्लब्ध वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर पेश नहीं की जासकती थीं, इससे न केवल यह ज्ञात हुआ कि 'अनुवांशिक:Genetics' और मज़हब यानि इस्लाम में कोई भिन्नता नहीं है बल्कि यह भी पता चला कि इस्लाम मज़हब इस प्रकार से विज्ञान का नेतृत्व कर सकता है, कि परम्पराबद्ध वैज्ञानिक दूरदर्शिता में कुछ इल्हामी रहस्यों को भी शामिल करता चला जाए।

पवित्र कुरआन में ऐसे बयान मौजूद हैं जिनकी पुष्टि कई सदियों बाद हुई है। इससे हमारे उस विश्वास को शक्ति मिलती है कि पवित्र कुरआन में उप्लब्ध ज्ञान वास्तव में अल्लाह की ओर से ही आया है।"

रीढ़ की हड्डी और पस्लियों के बीच से रिसने वाली बूंद

فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ مِن مَّاءٍ دَافِقٍ يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝

"फिर ज़रा इन्सान यही देख ले कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया। एक उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है; जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच से निकलता है।

(अल-कुरआन:सूर:86,आयत-5से7)

प्रजनन अवधि में संतान उत्पन्न करने वाले जनांगों यानि 'अण्डग्रंथि: Testicles' और 'अण्डाशय:Ovary' 'गुर्दो:Kidnies' के पास से 'मेरुदण्ड:Spinal Cord' और ग्यारहवीं-बारहवीं पस्लियों के बीच से निकलना प्रारम्भ करते हैं, इसके बाद वह कुछ नीचे उतर आते हैं। 'महिला प्रजनन ग्रंथियां: Gonads' यानि गर्भाशय 'पेड़ू:Pelvis' में रुक जाती हैं, जबकि 'पुरुष जनांग वंक्षण नली:Inguinal Canal' के मार्ग से 'अण्डकोष:Scrotum' तक जा पहुंचते हैं। यहां तक कि व्यस्क होने पर जबकि प्रजनन ग्रंथियां के नीचे सरकने की क्रिया रुक चुकी होती है। उन ग्रंथियों में 'उदरीय महाधमनी: Abdominal Aorta' के माध्यम से रक्त और स्नायु समूह का प्रवेश क्रम जारी रहता है. ध्यान रहे कि 'उदरीय महाधमनी:Abdominal Aorta' रीढ़ की हड्डी और पस्लियों के बीच होती है। 'लसीका निकास 'तंत्र:Lymphetic Drainage' और धमनियों में रक्त प्रवाह भी इसी दिशा में होता है।

शुक्राणु:न्यूनतम द्रव

'पवित्र कुरआन में कम से कम ग्यारह बार दुहराया गया है कि मानव जाति की रचना 'वीर्य:नुत्फ़ा' से की गई है जिसका अर्थ द्रव का न्युनतम भाग है। यह बात पवित्र कुरआन की कई आयतों में बार-बार आई है जिन में सूर:22,आयत-15 और सूर:23,आयत-13 के

अलावा सूर:16, आयत14, सूर:18, आयत-37, सूर:35, आयत-11, सूर:36,आयत 77, सूर:40, आयत-67, सूर:53, आयत-46, सूर:76, आयत-2 और सूर:80, आयत-19 शामिल हैं।

विज्ञान ने हाल ही में यह खोज निकाला है कि 'अण्डाणु:Ovum' को काम में लाने के लिये औसतन तीस लाख वीर्य 'शुक्राणु:Sperms' में से सिर्फ़ एक की आवश्यकता होती ह। अर्थ यह हुआ कि स्खलित होने वाली वीर्य की मात्रा का तीस लाखवां भाग या 1/30,000,00 प्रतिशत मात्रा ही गर्भाधान के लिये पर्याप्त होता ह।

'सुलाला:प्रारम्भिक द्रव' के गुण

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِن سُلَالَةٍ مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝

"फिर उसकी नस्ल एक ऐसे रस से चलाई जो तुच्छ जल की भांति है।"

(अल-कुरआन:सूर:22,आयत-8)

अरबी शब्द 'सुलाला' से तात्पर्य किसी द्रव का सर्वोत्तम अंश है। सुलाला का शाब्दिक अर्थ 'नवजात शिशु' भी है. अब हम जान चुके हैं कि स्त्रैन अण्डे की तैयारी के लिये पुरुष द्वारा स्खलित लाखों करोड़ों वीर्य शुक्राणुओं में से सिर्फ़ एक की आवश्यकता होती है। लाखों करोड़ों में से इसी एक वीर्य 'शुक्राणु:Sperm' को पवित्र कुरआन ने 'सुलाला' कहा है। अब हमें यह भी पता चल चुका है कि महिलाओं में उत्पन्न हज़ारों 'अण्डाणुओं:Ovam' में से केवल एक ही सफ़ल होता है। उन हज़ारों अंडों में से किसी एक कर्मशील और योग्य अण्डे के लिये पवित्र कुरआन ने 'सुलाला' शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द का एक और अर्थ भी है, किसी द्रव के अंदर से, किसी रस-विशेष का सुरक्षित स्खलन। इस द्रव का तात्पर्य पुरुष और महिला दोनों प्रकार के प्रजनन द्रव भी हैं, जिनमें लिंगसूचक 'युग्मक:Gametes' (वीर्य) मौजूद होते हैं। गर्भाधान की अवधि में स्खलित वीर्यों से दोनों प्रकार के अंडाणु ही अपने-अपने वातावरण से सावधानी पूर्वक बिछड़ते हैं।

संयुक्त-वीर्य:परस्पर मिश्रित द्रव

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝

"हम ने मानव को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया ताकि उसकी परीक्षा लें और इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये हमने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।"

(अल-कुरआन:सूर:76,आयत-2)

अरबी शब्द 'नुत्फ़तिन इम्शाज' का अर्थ मिश्रित द्रव है। कुछेक ज्ञानी व्याख्याताओं के अनुसार मिश्रित द्रव का तात्पर्य पुरुष और महिला के प्रजनन द्रव हैं. पुरुष और महिला के इस द्वयलिंगी मिश्रित वीर्य को 'युग्मनज:Zygote:जुफ़्ता' कहते हैं, जिसका पूर्व स्वरूप भी वीर्य ही होता है। परस्पर मिश्रित द्रव का एक दूसरा अर्थ वह द्रव भी हो सकता है जिसमें संयुक्त या मिश्रित वीर्य शुक्राणु या वीर्य अण्डाणु तैरते रहते हैं। यह द्रव कई प्रकार के शारिरिक रसायनों से मिल कर बनता है जो कई शारिरिक ग्रंथियों से स्खलित होता है।

इस लिये, 'नुत्फ़ा-ए-इम्शाज:संयुक्त वीर्य' यानि परस्पर मिश्रित द्रव के माध्यम से बने नवीन पुलिंग या स्त्रीलिंग वीर्य द्रव्य या उसके चारो ओर फैले द्रव्यों की ओर संकेत किया जा रहा है।

लिंग का निर्धारण

परिपक्व 'भ्रूण:Foetus' के लिंग का निर्धारण यानि उससे लड़का होगा या लड़की? स्खलित वीर्य शुक्रणुओं से होता है न कि अण्डाणुओं से। अर्थात् मां के गर्भाशय में ठहरने वाले गर्भ से लड़का उत्पन्न होगा, यह क्रोमोज़ोम के 23 वें जोड़े में क्रमश: XX/XY 'वर्णसूत्र:Chromosome' की अवस्था पर होता है। प्रारम्भिक तौर पर लिंग का निर्धारण समागम के अवसर पर हो जाता है और वह स्खलित वीर्य 'शुक्राणुओं:Sperm' के 'काम वर्णसूत्र:Sex Chromosome' पर होता है जो अण्डाणुओं की उत्पत्ति करता है। अगर अण्डे को उत्पन्न करने वाले शुक्राणुओं में X वर्णसूत्र है; तो ठहरने वाले गर्भ से लड़की पैदा होगी। इसके उलट, अगर शुक्राणुओं में Y वर्णसूत्र है तो ठहरने वाले गर्भ से लड़का पैदा होगा।

وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝

"और यह कि उसी ने नर और मादा का जोड़ा पैदा किया, एक बूंद से जब वह टपकाई जाती है।"

(अल-कुरआन:सूर:53,आयात-45से46)

यहां अरबी शब्द नुत्फ़ा का अर्थ तो द्रव की बहुत कम मात्रा है जबकि 'तुम्नी' का अर्थ तीव्र स्खलन या पौधे का बीजारोपण है। इस लिये 'नुतफ़:वीर्य' मुख्यता शुक्राणुओं की ओर संकेत कर रहा है क्योंकि यह तीव्रता से स्खलित होता है. पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फ़र्माता है:

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى فَجَعَلَ ۝ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝

"क्या वह एक तुच्छ पानी का जल-वीर्य नहीं था जो माता के गर्भाशय में टपकाया जाता है? फिर वह एक थक्का/लोथड़ा बना, फिर अल्लाह ने उसका शरीर बनाया और उसके अंगों को ठीक किया, फिर उससे दो प्रकार के (मानव) पुरुष और महिला बनाए।"

(अल-कुरआन:सूर:75,आयात-37से39)

ध्यान पूर्वक देखिए कि यहां एक बार फिर यह बताया गया है कि बहुत ही न्यूनतम मात्रा (बूंदों) पर आधारित प्रजनन द्रव, जिसके लिये अरबी शब्द 'नुत्फ़तम्मिन्नी' अवतरित हुआ है, जो कि पुरुष की ओर से आता है और माता के गर्भाशय में बच्चे के लिंग निर्धारण का मूल आधार है।

उपमहाद्वीप में यह अफ़सोस नाक रिवाज है कि आम तौर पर जो महिलाएं सास बन जाती हैं उन्हें पोतियों से अधिक पोतों का अरमान होता है. अगर बहु के यहां बेटों के बजाए बेटियां पैदा हो रही हों, तो वह उन्हें 'पुरूष संतान' पैदा न कर पाने के ताने देती हैं. अगर उन्हें केवल यही पता चल जाता है कि संतान के लिंग निर्धारण में महिलाओं के अण्डाणुओं की कोई भूमिका नहीं और उसका तमाम उत्तरदायित्व पुरुष वीर्य:शुक्राणुओं पर निर्भर होता है और इसके बावजूद वह ताने दें तो उन्हें चाहिए कि वह पुरुष संतान न पैदा होने पर; अपनी बहुओं के बजाए अपने बेटों को ताने दें या कोसें और उन्हें

बुरा भला कह। पवित्र क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान दोनों ही इस विचार पर सहमत हैं के बच्चे के लिंग निर्धारण में पुरुष शुक्राणुओं की ही ज़िम्मेदारी है, तथा महिलाओं का इसमें कोई दोष नहीं।

तीन अंधेरे पर्दों में सुरक्षित 'उदर'

خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ الْأَنْعَامِ
ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّن بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ
ثَلَاثٍ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۝

"उसी ने तुम को एक जान से पैदा किया। फिर वही है जिसने उस जान से उसका जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिये मवेशियों में से आठ नर और मादा पैदा किये, और वह तुम्हारी मांओं के 'उदरों:पेटो' में तीन-तीन अंधेरे परदों के भीतर तुम्हें एक के बाद एक स्वरूप देता चला जाता है। यही अल्लाह (जिसके यह काम हैं) तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है, कोई मा'बूद (पूजनीय) उसके अतिरिक्त नहीं ह।"

(अल-क़ुरआन:सूर:39,आयत-6)

प्रोफ़ेसर डॉ० कैथमूर के अनुसार, पवित्र क़ुरआन में अंधेरे के जिन तीन परदों की चर्चा की गई है, वह निम्नलिखित हैं:

- ☆ **मां के गर्भाशय की अगली दीवार**
- ☆ **गर्भाशय की मूल दीवार**
- ☆ **भ्रूण का खोल या उसके ऊपर लिपटी झिल्ली**

भ्रूणीय अवस्थाएं

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝ ثُمَّ
خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا
الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝

"हम ने मानव को मिट्टी के 'रस:सत' से बनाया, फिर उसे एक सुरक्षित स्थल पर टपकी हुई बूंद में परिवर्तित किया, फिर उस बूंद को लोथड़े का स्वरूप दिया, तत्पश्चात लोथड़े को बोटी बना दिया, फिर बोटी की हड्डियां बनाईं, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया, फिर उसे एक दूसरा ही रचना बना कर खड़ा

किया। बस बड़ा ही बरकत वाला है अल्लाह; सब कारीगरों से अच्छा कारीगर।"

(अल-क़ुरआन: सूर:23,आयात-12से14)

इन पवित्र आयतों में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मानव को द्रव की बहुत ही सूक्षम मत्रा से बनाया गया अथवा सृजित किया गया है, जिसे 'विश्राम:Rest' स्थल में रख दिया जाता है. यह द्रव उस स्थल पर मज़बूती से चिपटा रहता है। यानि स्थापित अवस्था में, और इसी अवस्था के लिये पवित्र क़ुरआन में 'क़रार-ए-मकीन' का गद्यांश अवतरित हुआ है। माता के गर्भाशय के पिछले हिस्से को रीढ़ की हड्डी और कमर के पट्ठों की बदौलत काफ़ी सुरक्षा प्राप्त होती है. उस भ्रूण को अनन्य सुरक्षा 'प्रजनन थैली:Amniotic Sac' से प्राप्त होती है जिसमें 'प्रजनन द्रव: Amniotic Fluid' भरा होता है। अत: सिद्ध हुआ कि माता के गर्भ में एक ऐसा स्थल है जिसे सम्पूर्ण सुरक्षा दी गई है।

द्रव की चर्चित न्यूनतम मात्रा 'अलक़ह' के रूप में होती है यानि एक ऐसे वस्तु के स्वरूप में जो 'चिमट जाने' में सक्षम हा। इसका तात्पर्य जोंक जैसी कोई वस्तु भी है। यह दोनों व्याख्याएं विज्ञान के आधार पर स्वीकृति के योग्य हैं, क्योंकि बिल्कुल प्रारम्भिक अवस्था में भ्रूण वास्तव में माता के गर्भाशय की भीतरी दीवार से चिमट जाता है जब कि उसका बाहरी स्वरूप भी किसी जोंक के समान होता है। इसकी कार्यप्रणाली जोंक की तरह ही होती है, क्योंकि, यह 'आंवल-नाल' के मार्ग से अपनी मां के शरीर से रक्त प्राप्त करता और उससे अपना आहार लेता है।

'अलक़ह' का तीसरा अर्थ 'रक्त का थक्का' ह। इस 'अलक़ह' वाले अवस्था से जो गर्भ ठहरने के तीसरे और चौथे सप्ताह पर आधारित होता है, बंद धमनियों में रक्त जमने लगता है। अत: भ्रूण का स्वरूप केवल जोंक जैसा ही नहीं रहता बल्कि वह रक्त के थक्के जैसा भी दिखाई देने लगता है। अब हम पवित्र क़ुरआन द्वारा प्रदत्त ज्ञान और सदियों के संघर्ष के बाद विज्ञान द्वारा प्राप्त आधुनिक जानकारियों की तुलना करेंगे।

1677ई० हेम और ल्यूनहॉक ऐसे दो प्रथम वैज्ञानिक थे, जिन्होंने 'खुर्दबीन:Microscope' से वीर्य शुक्राणुओं का अध्ययन किया था। उनका विचार था कि शुक्राणुओं की प्रत्येक कोशिका में एक छोटा सा मानव मौजूद होता है, जो गर्भाशय में विकसित होता है और एक नवजात शिशु के रूप में पैदा होता है। इस दृष्टिकोण को 'छिद्रण सिद्धान्त:Perforation Theory' भी कहा जाता है. कुछ दिनों के बाद जब वैज्ञानिकों ने यह खोज निकाला कि महिलाओं के अण्डाणु, शुक्राणु कोशिकाओं से कहीं अधिक बड़े होते हैं तो प्रसिद्ध विशेषज्ञ डी ग्राफ़ सहित कई वैज्ञानिकों ने यह समझना शुरु कर दिया कि अण्डे के अंदर ही मानवीय अस्तित्व सूक्षम अवस्था में पाया जाता है। इसके कुछ और दिनों बाद, 18वीं सदी ईसवी में 'मोपेशस: Maupeitius' नामक वैज्ञानिक ने उपरोक्त दोनों विचारों के प्रतिकूल, इस दृष्टिकोण का प्रचार शुरु किया कि, कोई बच्चा अपनी माता और पिता दोनों की संयुक्त विरासत:Joint Inheritence' का प्रतिनिधि होता है।

अलक़ह परिवर्तित होता है और 'मज़ग़ता' के स्वरूप में आता है, जिसका अर्थ है: कोई वस्तु जिसे चबाया गया हो, यानि जिस पर दांतों के निशान हों, और कोई ऐसी वस्तु हो जो चिपचिपी (लसदार) और सूक्षम हो, जैसे च्युंगम की तरह मुंह में रखा जा सकता हो। वैज्ञानिक आधार पर यह दोनों व्याख्याएं सटीक हैं। प्रोफ़ेसर कैथमूर ने प्लास्टो सेन:रबर और च्युंगम जैसे द्रव, का एक टुकड़ा लेकर उसे प्रारम्भिक अवधि वाले भ्रूण का स्वरूप दिया और दांतों से चबाकर 'मज़ग़ा' में परिवर्तित कर दिया। फिर उन्होंने इस प्रायोगिक 'मज़ग़ा' की संरचना की तुलना प्रारम्भिक भ्रूण:Foetus के चित्रों से की. इस पर मौजूद, दांतों के निशान मानवीय 'मज़गा पर पड़े कायखण्ड:Somites' के समान थे जो गर्भ में 'मेरुदण्ड: Spinal Cord' के प्राम्भिक स्वरूप को दर्शाते हैं।

अगले चरण में यह मज़ग़ा परिवर्तित होकर हड्डियों का रूप धारण कर लेता है। उन हड्डियों के गिर्द नरम और बारीक मांस या पट्ठों का ग़िलाफ़ (खोल) होता है फ़िर अल्लाह तआला उसे एक बिल्कुल ही अलग जीव का रूप दे देता है।

अमरीका में थॉमस जिफ़र्सन विश्वविद्यालय, फ़िलाडॅल्फ़िया, के उदर विभाग में अध्यक्ष, दन्त संस्थान के निदेशक और अधिकृत वैज्ञानिक प्रोफ़ेसर मारशल जौंस से कहा गया कि वह, भ्रूण-विज्ञान के संदर्भ से पवित्र क़ुरआन की आयतों की समीक्षा करें। पहले तो उन्होंने यह कहा कि कोई असंख्य प्रजनन चरणों की व्याख्या करने वाली क़ुरआनी आयतें किसी भी प्रकार से सहमति का आधार नहीं हो सकतीं, और हो सकता है कि पैग़म्बर मुहम्मद स.अ.व. के पास बहुत ही शक्तिशाली खुर्दबीन Microscope रहा हो। जब उन्हें यह याद दिलाया गया कि पवित्र क़ुरआन का नज़ूल:अवतरण 1400 वर्ष पहले हुआ था और विश्व की पहली खुर्दबीन:Microscope भी हज़रत मुहम्मद स.अ.व. के सैंकड़ों वर्ष बाद अविष्कृत हुई थी, तो प्रोफ़ेसर जौंस हंसे और यह स्वीकार किया कि, पहली अविष्कृत खुर्दबीन भी दस गुणा ज़्यादा बड़ा स्वरूप दिखाने में सक्षम नहीं थी और उसकी सहायता से सूक्षम दृश्य को स्पष्ट रूप में नहीं देखा जा सकता था। तत्पश्चात उन्होंने कहा: 'फ़िलहाल मुझे इस संकल्पना में कोई विवाद दिखाई नहीं देता कि जब पैग़म्बर मुहम्मद स.अ.व. ने पवित्र क़ुरआन की आयतें पढ़ीं तो उस समय विश्वस्नीय तौर पर कोई आसमानी (इल्हामी) शक्ति भी साथ में काम कर रही थी।

डॉ० कैथमूर का कहना है कि प्रजनन विकास के चरणों का जो वर्गीकरण सारी दुनिया में प्रचलित है, आसानी से समझ में आने वाला नहीं है, क्योंकि उसमें प्रत्येक चरण को एक संख्या द्वारा पहचाना जाता है। जैसे चरण संख्या-1, चरण संख्या-2 आदि। दूसरी ओर पवित्र क़ुरआन ने प्रजनन के चरणों का जो विभाजन किया है, उसका आधार पृथक और आसानी से चिन्हित करने योग्य अवस्था या संरचना पर है. यही वह चरण हैं, जिनसे कोई प्रजनन एक के बादा एक गुज़रता है, इसके अलावा यह अवस्थाएं, (संरचनाएं) जन्म से पूर्व, विकास के विभिन्न चरणों का नेतृत्व करतीं हैं और ऐसी वैज्ञानिक व्याख्याएं उप्लब्ध करातीं हैं, जो बहुत ही ऊंचे स्तर की तथा समझने योग्य होने के साथ साथ व्यवहारिक महत्व भी रखतीं हैं।

मातृ-गर्भाशय में मानवीय प्रजनन-विकास के विभिन्न चरणों की चर्चा निम्नलिखित पवित्र आयतों में भी समझी जा सकती है:

اَلَمْ یَکُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِیٍّ یُمْنٰی ثُمَّ کَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰی ۝ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَیْنِ الذَّکَرَ وَالْاُنْثٰی ۝

"क्या वह एक तुच्छ पानी का वीर्य न था जो (मातृ-गर्भाशय में) टपकाया जाता है? फिर वह एक थक्का बना फिर अल्लाह ने उसका शरीर बनाया और उसके अंग ठीक किये फिर उससे मर्द और औरत की दो क़िसमें बनाई।"

(अल-कुरआन:सूर:75,आयत-37से39)

اَلَّذِیْ خَلَقَکَ فَسَوّٰکَ فَعَدَلَکَ ۝ فِیْ اَیِّ صُوْرَةٍ مَّاشَاءَ رَکَّبَکَ ۝

"जिस ने तुझे पैदा किया, तुझे आकार प्रकार (नक-सक) से ठीक किया, तुझे उचित अनुपात में बनाया और जिस स्वरूप में चाहा तुझे जोड़ कर तैयार किया।"

(अल-कुरआन:सूर:82,आयात-7से8)

अर्द्ध निर्मित एवं अर्द्ध अनिर्मित गर्भस्थ भ्रूण

अगर 'मज़्ग़ा' की अवस्था पर 'गर्भस्थ-भ्रूण' बीच से काटा जाए और उसके अंदरूनी भागों का अध्ययन किया जाए तो हमें स्पष्ट रूप से नज़र आएगा कि (मज़्ग़ा के भीतरी अंगो में से) अधिकतर पूरी तरह बन चुके हैं, जब कि शेष अंग अपने निर्माण के चरणों से गुज़र रहें हैं। प्रोफ़ेसर जौंस का कहना है कि अगर हम पूरे गर्भस्थ-भ्रूण को एक सम्पूर्ण अस्तित्व के रूप में बयान करें तो हम केवल उसी हिस्से की बात कर रहे होंगे जिसका निर्माण पूरा हो चुका है. और अगर हम उसे अर्द्ध निर्मित अस्तित्व कहें तो फिर हम गर्भस्थ-भ्रूण के उन भागों का उदाहरण दे रहे होंगे जो अभी पूरी तरह से निर्मित नहीं हुए, बल्कि निर्माण की प्रक्रिया पूरी कर रहे है। अब सवाल यह उठता है कि उस अवसर पर गर्भस्थ-भ्रूण को क्या सम्बोधित करना चाहिये? सम्पूर्ण अस्तित्व या अर्द्ध निर्मित अस्तित्व, गर्भस्थ-भ्रूण के विकास की इस प्रक्रिया के बारे में जो व्याख्या हमें पवित्र क़ुरआन ने दी है, उससे बेहतर कोई अन्य व्याख्या सम्भव नहीं है। पवित्र क़ुरआन इस चरण को 'अर्द्ध निर्मित अर्द्ध अनिर्मित' की संज्ञा देता है। निम्नलिखित आयतों का आशय देखिए:

یٰٓاَیُّهَا النَّاسُ اِنْ کُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰکُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَیْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَیِّنَ لَکُمْ وَنُقِرُّ فِی الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓی اَجَلٍ مُّسَمًّی ثُمَّ نُخْرِجُکُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّکُمْ ۝

"लोगों! अगर तुम्हें जीवन के बाद मृत्यु के बारे में कुछ शक है तो तुम्हें मालूम हो कि हमने तुम को मिट्टी से पैदा किया है, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर मांस के बोटी से जो स्वरूप वाली भी होती है और बेरूप भी, यह हम इस लिये बता रहे हैं; ताकि तुम पर यथार्थ स्पष्ट करें। हम जिस (वीर्य) को चाहते हैं एक विशेष अवधि तक गर्भाशय में ठहराए रखते हैं। फिर तुम को एक बच्चे के स्वरूप में निकाल लाते हैं (फिर तुम्हारी परवरिश करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंचो।"

(अल-कुरआन:सूर:22,आयत-5)

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हम जानते हैं कि गर्भस्थ-भ्रूण विकास के इस प्रारम्भिक चरण में कुछ वीर्य ऐसे होते हैं जो एक पृथक स्वरूप धारण कर चुके हैं, जबकि कुछ स्खलित वीर्य; विशेष तुलनात्मक स्वरूप में आए नहीं होते। यानि कुछ अंग बन चुके होते हैं और कुछ अभी अनिर्मित अवस्था में होते हैं।

सुनने और देखने की इंद्रिया

मां के गर्भाशय में विकसित हो रहे मानवीय अस्तित्व में सब से पहले जो इंद्रिय जन्म लेती है वह श्रवण-इंद्रियां होती है। 24 सप्ताह के बाद 'परिपक्व भ्रूण:Mature Foetus' आवाज़ें सुनने के योग्य हो जाता है। फिर गर्भ के 28वें सप्ताह तक दृष्टि-इंद्रियां भी अस्तित्व में आ जाती हैं और 'दृष्टिपटल:Retina' रौशनी के लिये अनुभूत हो जाता है। इस प्रक्रिया के बारे में पवित्र क़ुरआन यूं फ़रमाता है:

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَکُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ قَلِیْلًا مَّا تَشْکُرُوْنَ ۝

"फिर उसको नक-सक से ठीक किया और उसके अंदर अपने प्राण डाल दिये और तुम को कान दिये, आंखें दी और दिल दिये, तुम लोग कम ही शुक्रगुज़ार होते हो।"

(अल-कुरआन:सूर:32,आयत-9)

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝

"हम ने मानव को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया ताकि उसकी परिक्षा लें और इस उद्देश्य के लिये हम ने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।"

(अल-क़ुरआन:सूर:76,आयत-2)

وَهُوَ الَّذِىْ اَنْشَاَلَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ قَلِيْلًا مَّاتَشْكُرُوْنَ ۝

"वह अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हें देखने और सुनने की शक्तियां दीं और सोचने को, दिल दिये मगर तुम लोग कम ही शुक्रगुज़ार होते हो।"

(अल-क़ुरआन:सूर:23,आयत-78)

ध्यान दीजिये कि तमाम पवित्र आयतों में श्रवण-इंद्रिय की चर्चा दृष्टि-इंद्रिय से पहले आयी हुई है, इससे सिद्ध हुआ कि पवित्र क़ुरआन द्वारा प्रदत्त व्याख्याएं, आधुनिक प्रजनन-विज्ञान में होने वाले शोध और खोजों से पूरी तरह मेल खाते हैं या समान है।

○❖○

सार्वजनिक-विज्ञान
General Science

उंगल-चिन्ह के निशान:(Finger Prints)

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰى اَنْ نُّسَوِّىَ بَنَانَهٗ ۝

"क्या मानव यह समझ रहा है कि हम उसकी हड्डियों को एकत्रित न कर सकेंगे? क्यों नहीं? हम तो उसकी उंगुलियों के पोर-पोर तक ठीक बना देने का प्रभुत्व रखते हैं।"

(अल-क़ुरआन:सूर:75,आयात-3से4)

काफ़िर या ग़ैर-मुस्लिम आपत्ति करते हैं कि जब कोई व्यक्ति मृत्यु के बाद मिट्टी में मिल जाता है और उसकी हड्डियां तक ख़ाक में मिल जाती हैं, तो यह कैसे सम्भव है कि 'क़यामत' के दिन उसके शरीर का एक-एक अंश पून: एकत्रित हो कर पहले वाली जीवित अवस्था में वापिस आजाए...? और अगर ऐसा हो भी गया, तो क़यामत के दिन उस व्यक्ति की ठीक-ठीक पहचान किस प्रकार होगी? अल्लाह तआला ने उपर्युक्त पवित्र आयत में इस आपत्ति का बहुत ही स्पष्ट उत्तर देते हुए कहा है कि वह (अल्लाह) सिर्फ़ इसी पर प्रभुत्व (क़ुदरत) नहीं रखता कि चूर-चूर हड्डियों को वापिस एकत्रित करदे बल्कि, इस पर भी प्रभुत्व रखता है कि हमारी उंगलियों की पोरों तक को दुबारा से पहले वाली अवस्था में ठीक-ठीक परिवर्तित कर दे।

सवाल यह है कि जब पवित्र क़ुरआन मानवीय मौलिकता के पहचान की बात कर रहा है तो 'उंगलियों के पोरों' की विशेष चर्चा

क्यों कर रहा है? सर फ्रांस गॉल्ट की तहक़ीक़ के बाद 1880 ई० में 'उंगल-चिन्ह: Finger Prints' को पहचान के वैज्ञानिक विधि का दर्जा प्राप्त हुआ. आज हम यह जानते हैं कि इस संसार में किसी दो व्यक्ति के उंगल-चिन्ह का नमूना समान नहीं हो सकता। यहां तक कि हमशक्ल जुड़ुवां भाई बहनों का भी नहीं. यही कारण है कि आज तमाम विश्व में अपराधियों की पहचान के लिये उनके उंगल-चिन्ह का ही उपयोग किया जाता है।

क्या कोई बता सकता है कि आज से 1400 वर्ष पहले किसको उंगल-चिन्हों की विशेषता और उसकी मौलिकता के बारे में मालूम था? यक़ीनन ऐसा ज्ञान रखने वाली ज़ात अल्लाह तआला के सिवा किसी और की नहीं हो सकती।

त्वचा में दर्द के अभिग्राहक:Receptors

पहले यह समझा जाता था कि अनुभूतियां और दर्द केवल दिमाग़ पर निर्भर होती हैं। अलबत्ता हाल के शोध से यह जानकारी मिली है कि त्वचा में दर्द को अनुभूत करने वाले 'अभिग्राहक:Receptors' होते हैं। अगर ऐसी कोशिकाएं न हों तो मनुष्य दर्द की अनुभूति (महसूस) करने योग्य नहीं रहता।

जब कोई डॉक्टर किसी रोगी में जलने के कारण पड़ने वाले घावों को इलाज के लिये परखता है तो वह जलने का तापमान मालूम करने के लिये; जले हुए स्थल पर सूई चुभोकर देखता है। अगर सूई चुभने से प्रभावित व्यक्ति को दर्द महसूस होता है, तो चिकित्सक या डॉक्टर को इस पर प्रसन्नता होती है। इसका अर्थ यह होता है कि जलने का घाव केवल त्वचा के बाहरी हद तक है और दर्द महसूस करने वाली कोशिकाएं जीवित और सुरक्षित हैं। इसके प्रतिकूल अगर प्रभावित व्यक्ति को सूई चुभने पर दर्द अनुभूत नहीं हो तो यह चिंताजनक स्थिति होती है क्योंकि इसका अर्थ यह है कि, जलने के कारण बनने वाले घाव:ज़ख़्म की गहराई अधिक है और दर्द महसूस करने वाली कोशिकाएं भी मर चुकी हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

"जिन लोगों ने हमारी आयतों को मानने से इन्कार कर दिया उन्हें निस्संदेह, हम आग में झोंकेंगे और जब उनके शरीर की 'त्वचा:खाल' गल जाएगी, तो उसकी जगह दूसरी त्वचा पैदा कर देंगे ताकि वह ख़ूब 'यातना:अज़ाब' का स्वाद चखें. अल्लाह बड़ी 'क़ुदरत:प्रभुता' रखता है और अपने फ़ैसलों को व्यवहार में लाने क़ा 'विज्ञान:हिक्मत' भली भांति जानता है।"

(अल-क़ुरआन:सूर:4,आयत-56)

थाईलैण्ड में च्यांग-माई यूनीवर्सिटी के उदर-विभाग:Department of Anatomy के संचालक प्रोफ़ेसर तीगातात तेजासान ने दर्द-कोशिकाओं के संदर्भ में शोध पर बहुत समय खर्च किया। पहले तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि पवित्र क़ुरआन ने 1400 वर्ष पहले इस वैज्ञानिक यथार्थ का रहस्य उद्घाटित कर दिया था। फिर इसके बाद जब उन्होंने उपरोक्त पवित्र आयतों के अनुवाद की बाज़ाब्ता पुष्टि करली तो वह पवित्र क़ुरआन की वैज्ञानिक सम्पूर्णता से बहुत ज़्यादा प्रभावित हुए। तभी यहां सऊदी अरब के रियाज़ नगर में एक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसका विषय था-"पवित्र क़ुरआन और सुन्नत में वैज्ञानिक निशानियां"। प्रोफ़ेसर तेजासान भी उस सम्मेलन में पहुंचे और सऊदी अरब के शहर रियाज़ में आयोजित "आठवें सऊदी चिकित्सा सम्मेलन" के अवसर पर उन्होंने भरी सभा में गर्व और समर्पण के साथ सबसे पहले कहा:--

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ۝

"अल्लाह के सिवा कोई 'मा'बूद: पूजनीय' नहीं और (मुहम्मद स.अ.व.) उसके रसूल है।"

○❖○

अंतिमाक्षर
Final Verdict

पवित्र क़ुरआन में वैज्ञानिक यथार्थ की उपस्थिति को संयोग क़रार देना दरअस्ल एक ही समय में वास्तविक बौद्धिकता और सही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बिल्कुल विरुद्ध है। वास्तव में क़ुरआन की पवित्र आयतों में शाश्वत वैज्ञानिकता, पवित्र क़ुरआन की स्पष्ट घोषणाओं की ओर संकेत करती है:

سَنُرِيهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ
اَنَّهُ الْحَقُّ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝

"शीघ्र ही हम उनको अपनी निशानियां सृष्टि में भी दिखाएंगे और उनके अपने 'नफ़्स:मनस्थिति' में भी यहां तक कि उनपर यह बात खुल जाएगी कि यह पवित्र क़ुरआन 'बरहक़:शाश्वत-सत्य' है। क्या यह पर्याप्त नहीं कि तेरा रब प्रत्यके वस्तु का गवाह ह।"

(अल-क़ुरआन:सूर:41,आयत-53)

पवित्र क़ुरआन तमाम मानवजाति को निमंत्रण देता है कि वे सब 'कायनात:सृष्टि' की संरचना और उत्पत्ति पर चिंतन-मनन करें:

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۝

"ज़मीन और आसमानों के जन्म में और रात और दिन के बारी बारी से आने में उन होशमंदों के लिये बहुत निशानियां हैं।"

(अल-क़ुरआन:सूर:3,आयत-190)

पवित्र क़ुरआन में उपस्थित वैज्ञानिक साक्ष्य और अवस्थाएं सिद्ध करते हैं कि यह वाक़ई 'इल्हामी' माध्यम से अवतरित हुआ है। आज से 1400 वर्ष पहले कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था जो इस तरह महत्वपूर्ण और सटीक वैज्ञानिक यथार्थों पर अधारित कोई किताब लिख सकता।

यद्यिपि पवित्र क़ुरआन कोई वैज्ञानिक ग्रंथ नहीं है बल्कि यह 'निशानियों:Signs' की पुस्तक है। यह निशानियां सम्पूर्ण मानव समूह को निमन्त्रण:दावत देती हैं कि वह पृथ्वी पर अपने अस्तित्व के प्रयोज़न और उद्देश्य की अनुभूति करें और प्रकृति से समानता अपनाए हुए रहे। इसमें कोई संदेह नहीं कि पवित्र क़ुरआन अल्लाह तआला द्वारा अवतरित 'वाणी: कलाम' है, रब्बुल-आलमीन:सृष्टि के ईश्वर की वाणी है, जो सृष्टि का सृजन करने वाला रचनाकार और मालिक भी है और इसका संचालन भी कर रहा है।

इसमेंअल्लाह तआला की एकात्मता:वहदानियत के होने का वही संदेश है जिसका 'प्रचार:तबलीग़' हज़रत **आदम** अलैहिस्सलाम, हज़रत **मूसा** अलैहिस्सलाम, हज़रत **ईसा** अलैहिस्सलाम और हुज़ूर नबी-ए-करीम **हज़रत मुहम्मद** स.अ.व. तक तमाम पैग़म्बरों ने किया है।

पवित्र क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान के विषय पर अब तक बहुत कुछ विस्तार से लिखा जा चुका है और इस क्षेत्र में प्रत्येक क्षण निरंतर शोध जारी है। इंशाअल्लाह यह शोध भी मानवीय समूह को अल्लाह तआला की वाणी के निकट लाने में सहायक सिद्ध होगा। इस संक्षिप्त सी किताब में पवित्र क़ुरआन द्वारा प्रस्तुत केवल कुछेक वैज्ञानिक यथार्थ संग्रहित किये गए हैं। में यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने इस विषय के साथ पूरा-पूरा इंसाफ़ किया है।

जापानी प्रोफ़ेसर तेजासान ने पवित्र क़ुरआन में बताई हुई केवल एक वैज्ञानिक निशानी के अटल यथार्थ होने के कारण; इस्लाम मज़हब धारण किया। बहुत सम्भव है कि कुछ लोगों को दस और कुछेक को 100 वैज्ञानिक निशानियों की आवश्यकता हो, ताकि वे सब यह मान लें कि पवित्र क़ुरआन अल्लाह द्वारा अवतरित है। कुछ लोग शायद ऐसे भी हों जो हज़ार निशानियां देख लेने और उसकी पुष्टि के बावजूद सच्चाई/सत्य को स्वीकार न करना चाहते हों। पवित्र क़ुरआन ने निम्नलिखित आयतों में; ऐसे अनुदार दृष्टिकोण वालों की 'भर्त्सना:मुज़म्मत' की है।

صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝

"बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं, यह अब नहीं पलटेंगे।"

(अल-क़ुरआन:सूर:2,आयत-18)

पवित्र क़ुरआन वैयक्तिक जीवन और सामूहिक समाज, तमाम लोगों के लिये ही सम्पूर्ण जीवन आचारण है। अलहम्दुलिल्लाह पवित्र क़ुरआन हमें ज़िन्दगी गुज़ारने का जो तरीक़ा बताता है वे इन सारे 'वादों: Isms' से बहुत ऊपर है, जिसे आधुनिक मानव ने केवल अपनी नासमझी और अज्ञानता के आधार पर 'अविष्कृत:ईजाद' किये हैं। क्या यह सम्भव है कि स्वयं सृजक और रचनाकार मालिक से ज़्यादा बेहतर नेतृत्व कोई और दे सके? मेरी 'प्रार्थना:दुआ' है कि अल्लाह तआला मेरी इस मामूली सी कोशिश को स्वीकार करे, हम पर 'दया:रहम' करे और हमें 'सन्मार्ग:सही' रास्ता दिखाए...आमीन।

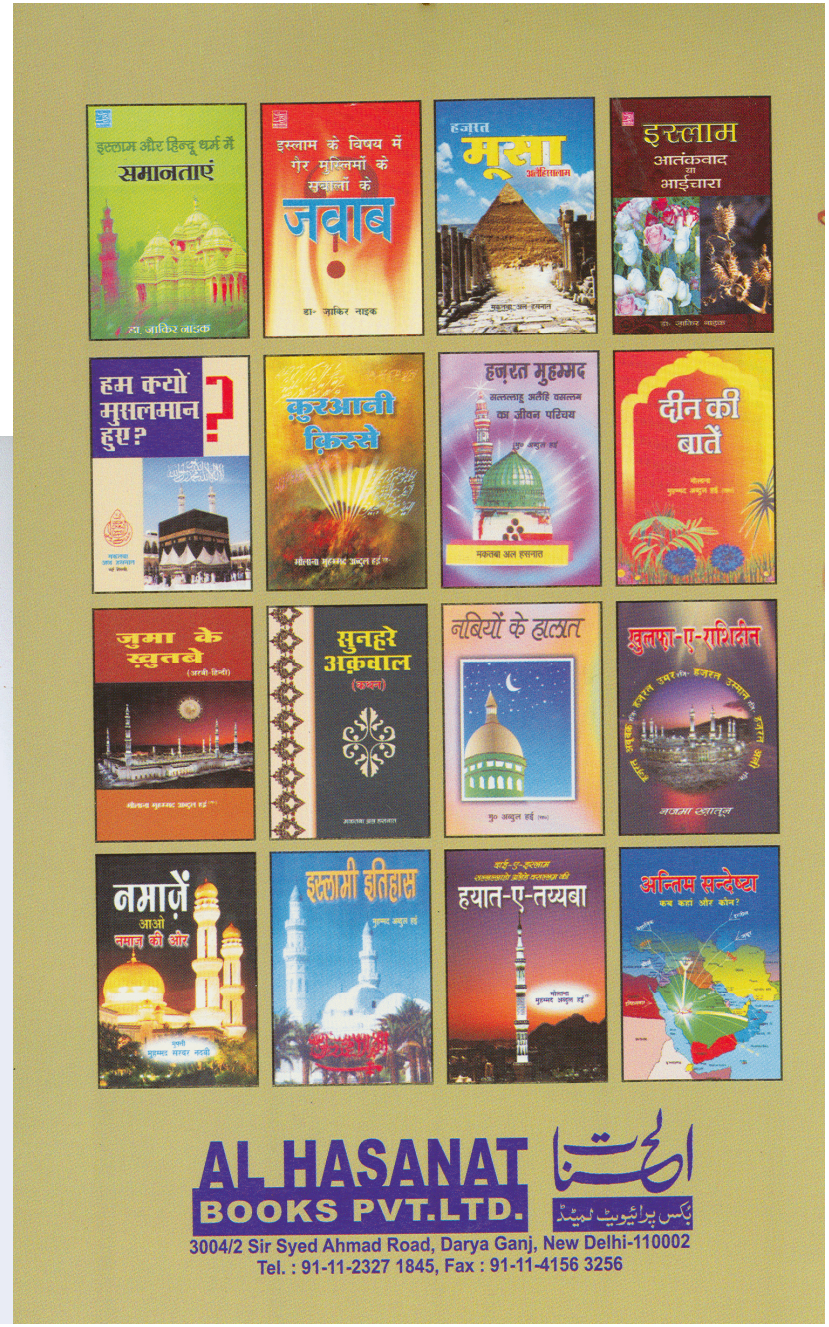

more pdf books:
islaminhindi.blogspot.com